ऋग्वेद ओ३म् यजुर्वेद

पवमान

(संयुक्तांक)

वर्ष : 33 कार्तिक-अग्रहायण-पौष वि0स0 2078 अंक : 11-12 नवम्बर-दिसम्बर 2021

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून वजनः 50 ग्राम

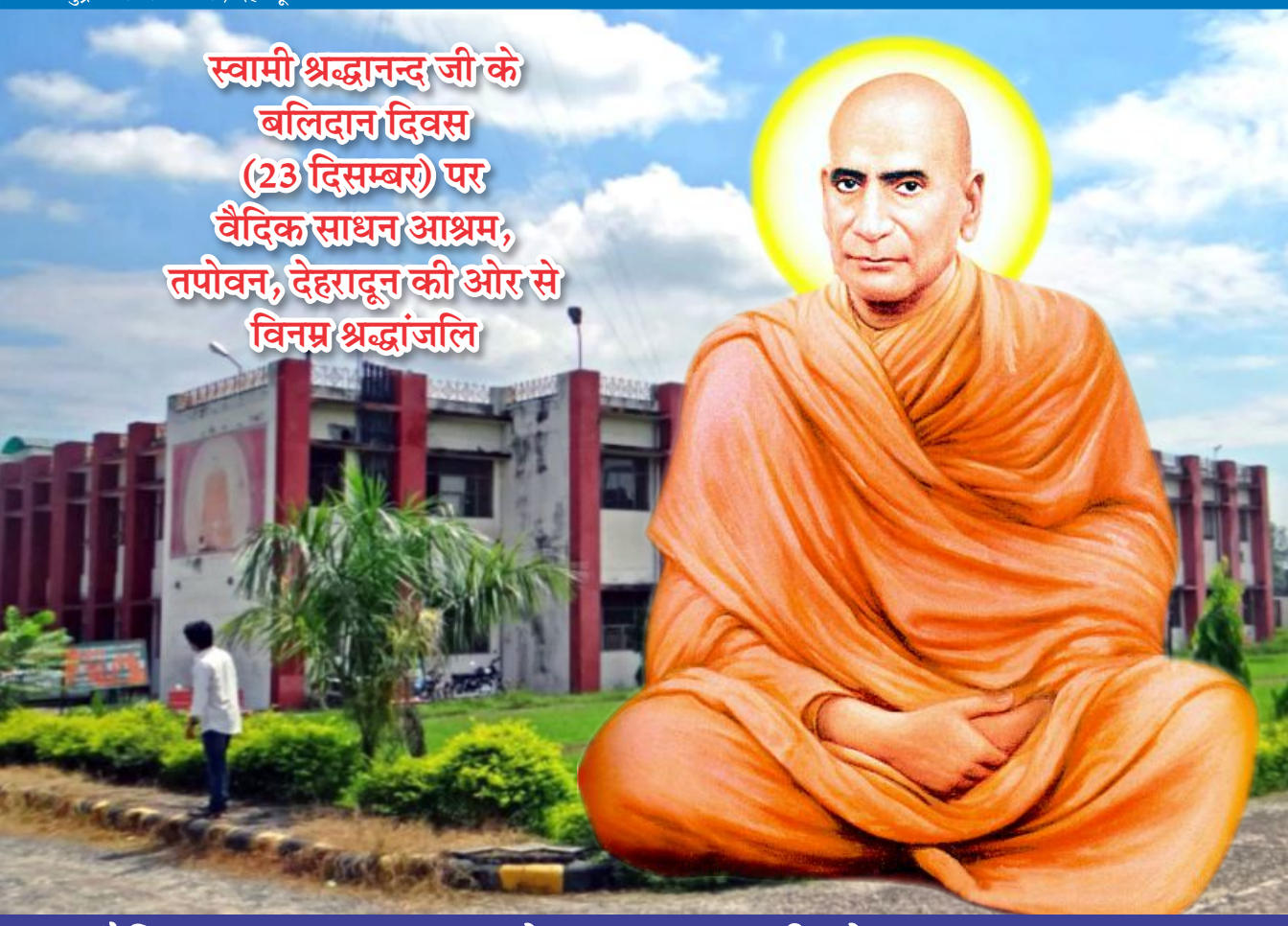

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन सोसायटी के वरिष्ठतम सदस्य श्री मंजीत सिंह जी का सम्मान करते हुए तपोवन सोसायटी के सदस्यगण

20 अक्टूबर, 2021 को ध्वजारोहण करके शरदुत्सव का शुभारंभ करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

ओ३म्

पवमान

वर्ष–33 अंक–11–12

कार्तिक–अग्रहायण–पौष 2078 विक्रमी नवम्बर–दिसम्बर 2021

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,122 दयानन्दाब्द : 197

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री विजय कुमार

मो. : 9837444469

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सहायक सम्पादक :–

अवैतनिक

मनमोहन कुमार आर्य–

मो. : 9412985121

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7895978734 (श्री चन्दन सिंह)

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकार	3
जीवात्मा की अमरता का वैदिक रहस्य	डॉ0 कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
वर्ण व्यवस्था, आर्य समाज और स्वामी श्रद्धानन्द	आचार्य ओम् प्रकाश	8
प्राचीन वैदिक पर्व दीपावली एवं ऋषि दयानन्द का महाप्रस्थान...	मनमोहन कुमार आर्य	11
महान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द	मनमोहन कुमार आर्य	14
ईश्वर सृष्टि की रचना व संचालन क्यों व किसके लिए करता है?	मनमोहन कुमार आर्य	17
आर्यसमाज अविद्या, अन्याय तथा अभाव को स्वीकार नहीं करता...	मनमोहन कुमार आर्य	20
स्मृति नाश और उसका आयुर्वेदिक इलाज	वैद्य भगवान दास	25
भूकंप–जागरुकता एवं जानकारी ही बचाव का एकमात्र उपाय है	डॉ. अजेय पॉल	27
प्राथमिक चिकित्सालय अर्थात् रसोईघर	आचार्य बालकृष्ण	30

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. ''वैदिक साधन आश्रम''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. ''पवमान''	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
3. 'तपोवन विद्या निकेतन''	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1.	कलर्ड फुल पेज	रु. 5000/– प्रति माह
2.	ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज	रु. 2000/– प्रति माह
3.	ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज	रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1.	वार्षिक मूल्य	रु. 200/– वार्षिक
2.	15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य	रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

ब्रह्ममुहूर्त का महत्व

ब्रह्ममुहूर्त रात्रि का चौथा प्रहर होता है। यह उषाकाल अर्थात् सूर्योदय से पहले का समय है। मनुस्मृति में कहा गया है– ''ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत् धर्मार्थी चानु चिंतयेत् कायाक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्वार्थमेव च।'' अर्थात् ब्रह्ममुहूर्त जो प्रातः चार से पांच बजे के बीच का समय होता है में उठकर धर्म, अर्थ और परमात्मा का ध्यान करें, कभी अधर्म का आचरण न करें। ब्रह्ममुहूर्त में उठकर अपने शरीर की शुद्धता व स्वास्थ्य रक्षा के उपाय जैसे प्रातः भ्रमण योगासन व प्राणायाम करने का शास्त्रों में उल्लेख मिलता है। उषाकाल में वातावरण शांत होता है और किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं रहता है। मनुष्य को ईश्वर ने नींद के रूप में एक वरदान दिया है जिससे मन, इंद्रियों व शरीर को विश्राम मिलता है और हम अगले दिन कार्य करने के लिए पूर्ण ऊर्जावान् हो जाते है। मनुष्य सुख से जीवन व्यतीत कर सके इसके लिए उसका स्वास्थ्य उत्तम होना चाहिए, क्योंकि कहा गया है–शरीर माद्यं खलु धर्मसाधनम्। इस समय वातावरण शांत रहता है। मन तथा मस्तिष्क भी पूर्ण नींद लेने के बाद तरोताजा रहता है। इसलिए पठन–पाठन और स्वाध्याय के लिए यह सर्वोत्तम समय है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है–

प्राता रथो नवो योजि सस्निश्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः।
दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत्।।

(ऋ0 2.18.1)

उक्त मन्त्र का अर्थ यह है कि प्रतिदिन प्रातःकाल यह शरीररूप रथ इन्द्रिय अश्वों से युक्त किया जाता है। यह रथ प्रतिदिन नवीन है। रात्रि को इसकी मरम्मत होकर यह प्रातः फिर से शक्ति सम्पन्न, दृढ व नया हो जाता है। इसमें जीर्णता नहीं आती। यह शुद्ध होता है इसकी मैल प्रतिदिन दूर कर दी जाती है। मैल ही तो इसको जीर्ण करने का कारण होती है। इस प्रकार यह निर्मल रथ चार युगों वाला होता है–ये चार युग हैं–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इन सब मंजिलों को पूरा करने वाला बनता है। सात छन्दों से युक्त वेदवाणी से प्रकाश की किरणों को प्राप्त करने वाला यह रथ है। यह दश इन्द्रियरूप दश अरियों वाला है। ये दश अरित्र इसकी गति का साधन बनते हैं। विचारशील पुरुष का यह हित करने वाला है। यह शरीररूप रथ यज्ञों से तथा बुद्धियों से तीव्र गति के योग्य होता है। प्रातः जागरण के लिए मनुष्य को रात्रि में समय से सोना चाहिए, ताकि कम से. कम छह से आठ घंटे की नींद लेकर ब्रह्म मुहूर्त में उठ सकें। समस्त स्त्री व पुरुष रात्रि के चौथे प्रहर में उठें और अपने आवश्यक दैनिक नैतिक कार्य करके सूर्योदय से पहले शुद्ध वायु में भ्रमण करें। जिससे उनका शरीर बलिष्ठ बन जाएगा और वे अपने गृहस्थ आश्रम में आनंद से रह सकेंगे। मनुष्य का प्रकृति के साथ विशेष सम्बन्ध है। इस अमृत बेला में समस्त प्राणियों के जीवन में नई ऊर्जा का संचार होने से सभी आनंदित रहते हैं। मनुष्य भी इस समय प्राणायाम, योगासन व ईश वंदना कर जीवन को श्रेष्ठता के मार्ग पर अग्रसर कर सकता है। आर्यसमाज के महाधन स्वामी श्रद्धानन्द ने 23 दिसम्बर को कर्त्तव्य वेदी पर बलिदान दे दिया था। उनकी स्मृति में यह अंक स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक के रूप में सुधी पाठकों की सेवामें समर्पित है।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

ओ३म्

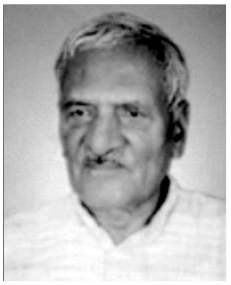

वेदामृत

'दिव्यगुणों की तीर्थयात्रा'

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं, जुष्टं जनाय दाशुषे।
देवां अच्छा यातवे जातवेदसम्, अग्निमीडे व्युष्टिषु।।

ऋग्वेद 1.44.4

ऋशिः प्रस्कण्व कण्वः। देवता अग्निः। छन्दः विराट् सतःपंक्तिः।

(देवान् अच्छ) देवजनों या दिव्यगुणों की ओर (यातवे) जाने के लिए (मैं) (व्युष्टिषु) उषःकालों में (श्रेष्ठं) श्रेष्ठ, (यविष्ठं) अतिशय युवा, (अतिथिं) अतिथि–रूप (सु–आहुतं) शुभ आहुति के पात्र (दाशुषे जनाय) आत्म–दान करने वाले जन के लिए (जुष्टं) प्रिय (जातवेदसम् अग्निं) सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापक अग्नि परमेश्वर की (ईडे) स्तुति करता हूं।

मैं चाहता हूं कि मैं देवजनों की कोटि में गिना जाऊं और मैं सत्य, न्याय, दया, दाक्षिण्य आदि सद्गुणों की तीर्थ–यात्रा करूं। मेरा अब तक का जीवन जन–साधारण का जीवन रहा है। पर अब मैं सामान्य जीवन से ऊपर उठकर देवजनों का–सा उज्जवल, पवित्र, उन्नत जीवन जीने का इच्छुक हूं। देवजन वे होते हैं, जिनके अन्तःकरण में दिव्यगुणों का वास होता है और दिव्यगुणों का वास प्रभु–कृपा से सम्भव है। प्रभु–कृपा और मानव की अभीप्सा एवं प्रयास मिलकर सफलता प्रदान करते हैं। अतः मैं प्रभातवेला में, उषा की किरणों के प्रस्फुटन के साथ–साथ अग्रणी एवं तेजस्वी अग्नि प्रभु का स्तवन, पूजन, वन्दन करता हूं तथा उसके गुण अपने अन्दर धारण करने की प्रेरणा ग्रहण करता हूं।

'अग्नि' नाम वाला वह परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है, प्रशस्यों में प्रशस्यतम है। जगत् में जो सूर्य, चन्द्र, जल, वायु प्रभृति उत्कृष्ट पदार्थ पाये जाते हैं तथा जो बड़े–बड़े प्रतिष्ठित प्रशस्त जन विद्यमान हैं, उन सब जड़–चेतन में वह प्रकृष्टतम है। वह 'यविष्ठ' है, सबसे अधिक युवा है। उसकी शक्ति के सम्मुख बड़े–से–बड़े युवक नरपुंगव हार मानते हैं। साथ ही वह नित्य–तरुण है, सामान्यजनों की भांति कभी बूढ़ा नहीं होता। वह मानव के हृदय में अतिथि के समान अर्चनीय भी है। वह 'अग्नि' देव 'सु–आहुत' है, हमारी शुभ आहुति का पात्र है, हमारे शुद्ध आत्म–समर्पण को ग्रहण करनेवाला है। वह आत्म–समर्पण–कर्ता का 'जुष्ट' है, प्रिय है, उससे प्रेमपूर्वक सेवनीय है। 'जातवेदाः' है, समस्त उत्पन्न पदार्थों का ज्ञाता और समस्त उत्पन्न पदार्थों में व्यापक है।

हे मेरे सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापक जातवेदः प्रभु! अपने समान तुम मुझे भी श्रेष्ठ बनाओ, मुझे भी सदा–युवा एवं कर्मण्य बनाओ। मुझ आत्म–समर्पक के तुम प्रिय बनो। मुझे सच्चे अर्थों में तुम देव बना दो, दिव्यगुणों का धारक बना दो। दिव्यगुणों की तीर्थयात्रा के लिए ही मैं तुम्हारी वन्दना कर रहा हूं।

(पुस्तक वेद–मंजरी से साभार)

जीवात्मा की अमरता का वैदिक रहस्य

–डॉ0 कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में याज्ञवल्क्य ने परमेश्वर का ज्ञान देते हुए कहा है–''यस्य आत्मा शरीरम्'' यह जीवात्मा मानो ईश्वर का शरीर है। वेद के अनुसार त्रैतवाद है। इसमें प्रथम पंच भौतिक शरीर है जिस में जीवात्मा निवास करता है जो इस शरीर में कुछ समय के लिए आया है, दूसरा संसार का रचयिता एवं कर्मानुसार जीवात्माओं को फल देने वाला चेतन, अविनाशी एवं सर्वशक्तिमान परमात्मा है और तीसरी प्रकृति है। यह तीन तत्त्व हैं। यजुर्वेद के मंत्र ४०.५ में कहा गया है–''तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्मतः'' वह ईश्वर सब पदार्थों के अन्दर बाहर सब जगह है तथा ''ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्'' (यजु0.४०.१) अर्थात् संसार में यह जो कुछ भी सूर्यादि जड़ पदार्थ एवं सब चेतन जीवात्माएँ हैं, इन दोनों जड़ एवं चेतन तत्त्वों में ईश्वर विद्यमान है। यहाँ हमें जान लेना चाहिए कि इस वेद मन्त्र में 'जगत्याम् जगत्' कह कर दो जगत् का उपदेश दिया है और वह दो जगत हैं सम्पूर्ण पृथिवी, सूर्य, जल, वायु इत्यादि एवं दूसरा चेतन जगत् जिसमें पशु–पक्षी, मानव इत्यादि के सम्पूर्ण जड़ शरीरों में रहने वाली चेतन, अविनाशी जीवात्माएँ। इन दोनों जगत् अर्थात् सम्पूर्ण पृथिवी इत्यादि जड़ पदार्थ एवं अनन्त चेतन जीवात्माओं में स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर बसा हुआ है। इस वैदिक सत्य को जानकर भी हम मोह इत्यादि से दूर रहें क्योंकि सब में तो ईश्वर बसा हुआ है। हमारे शरीर, घर, मकान–दुकान, धन, हमारे सम्बन्धी सबमें हमसे पहले ईश्वर बसा हुआ है, तब जब हम कुछ समय के लिए शरीर, मकान इत्यादि में बसने आते हैं और अज्ञानवश

व्यर्थ में इन पदार्थों को हमेशा के लिए अपना मान बैठते हैं, छोड़ना नहीं चाहते, दान नहीं करते इत्यादि तब इस झूठे प्यार एवं मोह के कारण ही प्राणी शोक करता है। कोई भी दूसरा जीवात्मा मारने पर मर जाता है, तो हे मारने और मरने वाले दोनों ही देव–विद्या, ब्रह्मविद्या के रहस्य को नहीं जानते हैं, क्योंकि यह जीवात्मा न तो अपने आप मर सकता है और न ही किसी अन्य के द्वारा मारा जा सकता है। श्रीकृष्ण द्वारा इस ब्रह्म रहस्य को समझाने का अभिप्रायः यह है कि हे अर्जुन–भीष्म आदि पूजनीय गुरुओं का जीवात्मा इनके शरीरों में रह रहा है, परन्तु दुर्योधन के साथ सशरीर रहते हुए भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य आदि के जीवात्माएँ चाहकर भी अपने शरीरों से पाण्डवों का साथ नहीं दे पा रहे थे। अतः श्रीकृष्ण कहते हैं कि इन भीष्मादि के शरीर समाप्त कर दो लेकिन इनकी पवित्र जीवात्माओं को कोई भी नहीं मार सकता है। अतः सत्य यह है कि भीष्म, द्रोण एवं कृपाचार्य तथा कौरव इत्यादि अन्य भी जो हैं वे सब जीवात्माएँ हैं। इनके शरीर धर्मयुक्त कार्य नहीं कर रहे थे। अतः इन शरीरों को समाप्त करने का आदेश दिया गया था, क्योंकि इनके जीवात्माएँ अजर, अमर, अविनाशी थे। अतः वास्तव में ये महापुरुष और दूसरे सम्बन्धी शरीर से मर जाने वाले थे। वैसे भी यह शरीर एक दिन नष्ट होकर रहेगा। अतः पापयुक्त कर्म करने वाले शरीरों को अभी ही समाप्त करने के लिये कहा गया था, जिससे इन शरीरों के द्वारा और अधिक पृथिवी

पर पाप न हों। परन्तु अर्जुन का आत्मिक सम्बन्ध तो इनकी अमर जीवात्माओं से था। श्रीकृष्ण भगवद्गीता में कहते हैं–

'न जायते म्रियते वा कदाचिन् नाये भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥'

(गीता २/२०)

अर्थ–हे अर्जुन! कभी भी यह जीवात्मा जन्म नहीं लेता और न कभी मरता है। यह जीवात्मा जन्म नहीं लेता, यह नित्य है अर्थात् अनादि काल से है, सदा से चला आ रहा, पुरातन है। शरीर के मरने पर, नष्ट होने पर भी नहीं मरता है। वेद में कहा गया है– 'इयं कल्याण्यजरा मर्त्यस्यामृता गृहे' अर्थात् जीवात्मा अजर है और मनुष्य के शरीर रूपी घर में अमृत है न मरने वाला है। इसी प्रकार अथर्ववेद मंत्र (५/६/७) में कहा है–'अयम् अहम् अस्तृत नाम अस्मि' अस्तृत का अर्थ न मरने वाला है। मंत्र का भाव है कि जीवात्मा अहिंसिक नाम वाला है अर्थात् कभी न मरने वाला है। इन दोनों मंत्रों का यही भाव है कि जीवात्मा शरीर में रहने वाला चेतन और कभी न मरने वाला अजर अमर सत्ता है। वह पदार्थ नष्ट नहीं होता, जिसका कभी निर्माण नहीं होता है। अतः न तो जीवात्मा कभी बना है और ना ही कभी मरेगा। इस सत्य को ही श्रीकृष्ण वेदानुसार इस श्लोक में प्रदर्षित कर रहे हैं। भगवद्गीता श्लोक (३/१५) में श्रीकृष्ण स्वयं कह रहे हैं कि वेद परमात्मा से उत्पन्न हुए हैं। स्वयं यजुर्वेद मंत्र (३१/७) कहता है कि चारों वेदों का ज्ञान ईश्वर से उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार व्यास मुनि रचित सम्पूर्ण गीता का ज्ञान चारों वेदों का अंश ही है। वेद त्याग कर गीता का व्याख्यान अप्रमाणिक हो सकता है। जीवात्मा की अमरता के वैदिक रहस्य को समझाते हुए श्रीकृष्ण कह रहे हैं कि हे अर्जुन! ये जीवात्मा न कभी जन्म लेता है और न कभी मरता है। दूसरा कि यह जीवात्मा सदा से चला आ रहा है और जन्म नहीं लेता। क्योंकि जन्म का अर्थ है उत्पन्न हो जाना, अस्तित्व में आ जाना, बन जाना। परन्तु यह सब गुण जीवात्मा के नहीं है। उत्पन्न तो वह होगा जो पहले बना नहीं था और अब अस्तित्व में आ गया। परन्तु जीवात्मा तो कभी बना ही नहीं है। इसका अस्तित्व तो सदा से है और सदा रहेगा। यही बात ऊपर वेद मन्त्रों में कही गई है। हाँ, बनता तो पंच भौतिक शरीर है, जिसके बारे में तीनों विद्याओं को सुनकर समझ लेता है और पुनः यज्ञ, ईश्वर नाम स्मरण एवं अष्टांग योग–विद्या का अभ्यास करता है तब ही जीव अपने शरीर से पृथक् स्वयं को अर्थात् जीवात्मा को जान लेता है या अनुभव कर लेता है। इस अवस्था में जीवात्मा में ही विराजमान सर्वशक्तिमान ईश्वर की अनुभूति संभव होती है। अतः जिज्ञासुओं को ऐसे सन्तों से बचना चाहिए जो वेद विरुद्ध हैं, झूठे आश्वासन तथा लचीली मनघढ़न्त कथा सुनाते हैं और जनता का पैसा लूटते है।

शरीर में रहने वाला यह चेतन जीवात्मा अति सूक्ष्म, अपरिवर्तनशील अविनाशी एवं जन्म–मृत्यु से रहित गुणों वाला है। जीवात्मा ज्ञानवान् एक चेतन तत्त्व है। यह स्वयं अणु नहीं है। परन्तु अणु से बने पंचभौतिक शरीर में निवास करता है। शरीर धारण करने पर इसमें इच्छा–द्वेष, सुख–दुःख प्रयत्न आदि गुण आ जाते हैं। शरीर में रहकर जब जीवात्मा ज्ञानोपार्जन के लिए प्रयत्न करता है तब यह अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष प्राप्त करने में समर्थ होता है। शरीर नष्ट हो जाने पर यह जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर सहित पहले दिन सूर्य, दूसरे दिन अग्नि, तीसरे दिन वायु, चौथे दिन आदित्य, पाँचवे दिन चन्द्रमा, छठे दिन ऋतु, सातवें दिन मनुष्यादि प्राणी, आठवें दिन सूक्ष्म वायु, नवें दिन प्राण, दसवें दिन उदान, ग्यारवें दिन विद्युत, बारहवें दिन सब दिव्य गुणों

को प्राप्त करता है। कुछ समय तक आकाश, पृथिवी इत्यादि पर भ्रमण करके पुनः कर्मानुसार, गर्भाशय में पहुंचकर शरीर धारण करता है और पाप–पुण्य कर्मों द्वारा सुख–दुःख भोगता है। जब तक यह जीवात्मा वेदानुकूल यज्ञ, योगाभ्यास इत्यादि शुभ कर्मों को करता हुआ मोक्ष को प्राप्त नहीं होता तब तक बार–बार जन्म मृत्यु व सुख–दुःख को प्राप्त होता रहता है। शरीर नष्ट होते रहते हैं, परन्तु जीवात्मा कभी नष्ट नहीं होता। जिस शरीर का परमेश्वर निर्माण करता है उसी शरीर को वह नष्ट भी कर देता है। इस प्रकार इस श्लोक में श्रीकृष्ण जीवात्मा के इसी वैदिक एवं सनातन स्वरूप को समझाते हुए कह रहे हैं–हे अर्जुन! जब यह जीवात्मा नित्य, अजन्मा, अविनाशी एवं अपरिवर्तनशील है तो फिर कौन किसको मरवा सकता है और कौन किसको कैसे मार सकता है। अतः हे अर्जुन! तू भी अपने सामने खड़े सम्बन्धियों को (अविनाशी जीवात्माओं को) कैसे मार सकता है। हे अर्जुन! तू तो केवल इनके शरीरों का नाश कर सकता है। परन्तु इन (जीवात्मा) का नाश नहीं कर सकता है। जब इनका शरीर नहीं रहेगा तब तो कर्मानुसार यह ब्रह्मलीन होकर मोक्ष का सुख पाएँगे अथवा ईश्वर की व्यवस्थानुसार कर्मानुसार पुनः दूसरा शरीर धारण कर लेंगे परन्तु इनका वध कोई नहीं कर सकता है। वस्तुतः यह रहस्य मोह–माया में पड़े जीव को समझ नहीं आता है। अविद्याग्रस्त प्राणी अपने को शरीर मान बैठता है और शरीर के नष्ट होने को मृत्यु मानता है। श्रीकृष्ण इसी भ्रम से अर्जुन को मुक्त करने के लिए यह वैदिक उपदेश दे रहे हैं। श्रीकृष्ण भगवद्गीता में यह भी कहते हैं–

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ।।"

(गीता २/२२)

अर्थ–जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर दूसरे नए वस्त्रों को ग्रहण करता है वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीरों को त्यागकर दूसरे नए शरीरों को प्राप्त होता है।

भावार्थ–ऋग्वेद मंत्र (६/६/४) में कहा है कि शरीर में दो चेतन तत्त्व हैं। प्रथम निश्चल, सर्वज्ञ एवं कर्म फल के संबंध से रहित, स्वयं अपनी ज्योति से प्रकाशित चेतन परमात्मा है, जिसने सारा संसार बनाया है। दूसरा तत्त्व चेतन जीवात्मा है, जो शरीर में रहकर पाप और पुण्य के फल का भोग करता है। यह शरीर नाशवान है जबकि जीवात्मा और परमात्मा दोनों अविनाशी तत्त्व हैं। अगले ही मंत्र में कहा है कि इस शरीर की रचना में मन, इन्द्रियाँ, प्राण एवं शरीर वर्तमान हैं एवं शरीर की इन्द्रियों के कारण जीवात्मा कार्य व्यवहार करता है। जबकि ईश्वर सर्वशक्तिमान है अर्थात् सब प्रकार की शक्तियाँ स्वयं ईश्वर में विद्यमान हैं। वह स्वयंभू है। अतः उसे किसी इन्द्रिय इत्यादि पर आश्रित होने की जरूरत नहीं होती। ऋग्वेद मंत्र (१/२४/२) पुनर्जन्म सिद्ध करता हुआ कहता है कि "सः नः पुनः दात्' अर्थात् ईश्वर हमें पुनः दूसरा जन्म देता है एवं "पुनः पितरम् मातरम् च दृशेयम्'' हम पुनर्जन्म में फिर माता–पिता, स्त्री, पुत्र एवं भाई–बन्धुओं के दर्शन करते हैं। भाव यह है कि जीवात्मा का शरीर वृद्धावस्था पाकर एवं वृद्ध शरीर को त्यागकर पुनः कर्मानुसार दूसरा जन्म लेकर जीवात्मा दूसरा शरीर धारण करता है। इसी वैदिक सत्य को श्रीकृष्ण यहाँ समझा रहें हैं कि हे अर्जुन! इस वृद्ध शरीर को त्यागकर जीवात्मा दूसरा जन्म लेकर नया शरीर धारण करता है और बड़ा उत्तम उदाहरण दे रहे हैं कि जैसे कोई मनुष्य फटे–पुराने कपड़ों को फेंककर दूसरे नए वस्त्र पहन लेता है, वैसे ही यह जीवात्मा पुराने वृद्ध

शरीर को त्यागकर परमेश्वर की व्यवस्थानुसार गर्भ में पहुँचकर बिल्कुल नया शरीर धारण कर लेता है। श्री कृष्ण का भाव यही है कि हे अर्जुन जिस भी शरीर को अपने बाणों से भेद देगा वह शरीर मरण समान होकर पृथिवी पर गिर जाएगा और उस शरीर में रहने वाली जीवात्मा समयानुसार ईश्वर के नियमानुसार नया शरीर धारण कर लेगा। अतः जीवात्मा तो वही होगा जो सदा से चली आ रहा है और जो नित्य है, केवल शरीर ही बदल जाएगा। यह कार्य सचमुच ऐसा होगा जैसे कोई किरायेदार एक मकान को छोड़कर दूसरे मकान में चला जाता है। श्रीकृष्ण भगवद्गीता में यह भी कहते हैं–

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।"

(गीता २/ २३)

अर्थ–इस आत्मा को शस्त्रादि नहीं काट सकते और इसको न आग जला सकती है। इसको जल नहीं गीला कर सकता है और वायु नहीं सुखा सकता है।

इसी के अगले श्लोक में कहा गया है–

"अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।।

(गीता २/२४)

भावार्थ–जैसा कि प्रकरण में चला आ रहा है कि जीवात्मा अजर–अमर अविनाशी तत्त्व है और कर्मानुसार शरीर में निवास करती है। अतः इस जीवात्मा को कोई भी तलवार, चाकू, गोली, बारूद, बम इत्यादि शस्त्र न घायल कर सकता है, न काट सकता है। बिल्कुल ऐसे ही जैसे यदि खाली स्थान आकाश में गोलियां चलाई जाएँ तो आकाश न घायल होगा न कटेगा लेकिन जीवात्मा तो आकाश से भी अति सूक्ष्म तत्त्व है। अतः उसे शस्त्रादि क्या काटेगें! दूसरा, जैसे आकाश को अग्नि जला नहीं सकती, वैसे ही अविनाशी जीवात्मा को अग्नि जला नहीं सकती। अंतिम समय में जीवात्मा शरीर से निकल जाती है। तीसरा, इसी प्रकार इस जीवात्मा को पानी गीला नहीं कर सकता। केवल मृतक शरीर को को ही पानी से स्नान कराया जाता है। चौथा इस जीवात्मा को वायु सुखा नहीं सकती। वायु केवल कपड़े सुखाती है। अतः शरीर में रहने वाली प्राण– अपान आदि वायु से भी शरीर का संबंध है, जीवात्मा का नहीं। हम साधारण जनों को भग्वद्गीता में शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता के सन्देश से शिक्षा लेते हुए अपने स्वजनों के कालकवलित होने पर अधिक शोकाकुल न होकर जीवन के प्रति अपने कार्य दायित्वों की ओर प्रेरित होना ही श्रेयकर है।

आत्मा परमात्मा आदि सूक्ष्म तत्वों को यथार्थ रूप से जानें। इनकों यथार्थ रूप में जानने से और परमात्मा के आदेश का पालन करने से ही कल्याण होगा। यूं तो संसार में असंख्य पदार्थ हैं परन्तु हमारे लिए इतने पदार्थों को जानना असम्भव है, क्योंकि हम आत्मायें अल्पज्ञ हैं। हमारा सामर्थ्य बहुत कम है, इसलिए हम इन पदार्थों को नहीं जान सकते। ईश्वर ने वेदों में यह बताया है कि संसार में सुख कम मिलता है और दुख अधिक मिलता है। यदि संसार में जन्म ले लिया तो दुख भोगना ही पड़ेगा। इसलिए बार-बार जन्म-मरण के चक्र से छूटें और मोक्ष प्राप्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बनायें।

-आचार्य प्रेयेश जी, रोहतक

वर्ण व्यवस्था, आर्य समाज और स्वामी श्रद्धानन्द

—आचार्य ओम् प्रकाश, नई दिल्ली

आर्य समाज अपने संस्थापक आचार्य स्वामी दयानंद सरस्वती और वैदिक धर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था के कर्मणा स्वरूप को मान्यता देता है और चाहता है कि हिन्दू समाज अथवा हिन्दू जाति, जिसमें वर्तमान समय में जन्मना जाति व्यवस्था लागू है, वह गुण कर्मानुसार वाली वैदिक काल की व्यवस्था में ढल जाये। देखने में आता है कि आर्य समाज में भी सनातन धर्म के पौराणिक हिन्दुओं की तरह ही वर्णव्यवस्था के स्थान पर जाति व्यवस्था ही चल रही है। प्रतीत यह होता है कि इस तरह आर्य समाज कभी वर्ण व्यवस्था को कर्मणा नहीं ला पायेगा।

वर्ण व्यवस्था पर पौराणिक विद्वान पंडित गिरधर चतुर्वेदी और पंडित इन्द्र विद्यावाचस्पति के बीच एक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें प्रौढ़ विद्वान् चतुर्वेदी की वर्ण को जन्मना सिद्ध करने की स्थापनाओं का इन्द्र जी सटीक उत्तर नहीं दे सके थे। इसी काशी विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रो० बलदेव उपाध्याय भी मानते थे कि वर्ण व्यवस्था सदा से जन्मना रही है। (द्रष्टव्य—वैदिक साहित्य एवं संस्कृति नामक ग्रंथ) आर्य समाज सफल क्यों नहीं हो पाया?

अब हम यह विचार करते हैं कि आर्य समाज आखिर पिछले डेढ़ सौ वर्षों से वर्ण व्यवस्था को कर्म पर आधारित क्यों नहीं कर सका है? क्या इस कारण से कि वर्ण प्रारम्भ से ही जन्म पर आधारित रहा है, कर्म पर नहीं। अतः यह प्रयास करना ही व्यर्थ का काम है अथवा आर्य समाज के प्रयास में कमी रही है? हम समझते हैं कि आर्य

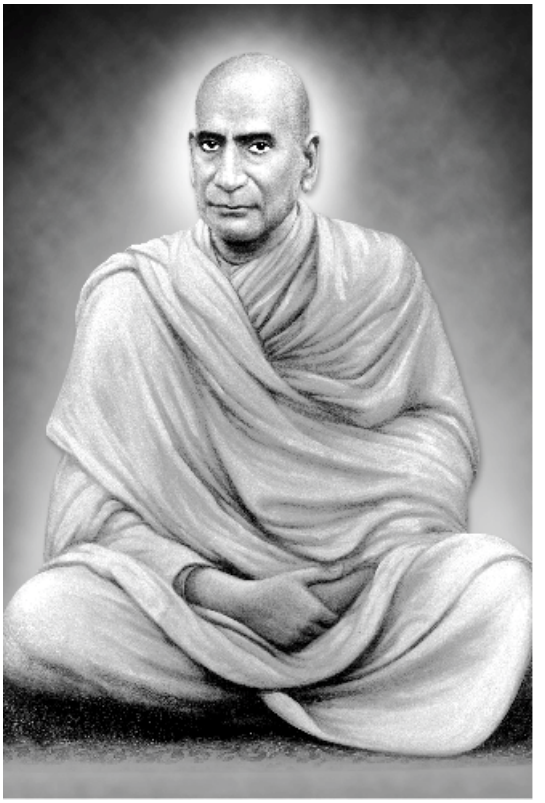

समाज ने कभी भी इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार नहीं किया और आर्य जगत् के जिन विद्वानों ने वर्ण अथवा जाति—व्यवस्था पर गंभीरता से विचार किया है, उनके द्वारा निकाले गए निष्कर्षो की कभी छानबीन नहीं की है। पंडित शिव शंकर शर्मा काव्यतीर्थ ने जाति निर्णय में, साहित्यकार वैद्य गुरुदत्त ने बुद्धि बनाम बहुमत में पंडित गंगा प्रसाद् उपाध्याय ने वेद प्रवचन में उनके यशस्वी सुपुत्र डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने आर्य समाज समस्याएं और संघर्ष

तथा परोपकारी पत्रिका मई प्रथम 2017 में प्रकाशित लेख में वर्ण अथवा जाति–व्यवस्था के विषय में गहन अध्ययन प्रस्तुत किये गये हैं। पंडित काव्यतीर्थ के ग्रंथ को प्रकाशित हुए तो 113 वर्ष बीत चुके हैं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के नाम से कौन अपरिचित होगा। वे जब पहले–पहल घर से निकले, रामावतार साधु के नाम से जाने जाते थे। वे आर्य समाज में आये और प्रखर वक्ता बने। तुम्हारी जाति की क्षय नामक निबन्ध में जाति प्रथा पर जितनी गहरी चोट वे कर सकते थे, उन्होंने की है। गांधी तक को छोड़ा नहीं है। आर्य समाज के उपदेशक विद्वान मंच से तो अपने कथन की पुष्टि में इन विद्वानों के विचारों को कोट तो करते हैं, परंतु सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों के मन में इस विषय पर समय–समय पर गोष्ठियां कराने का विचार नहीं आता है।

यहां यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि वेद और उपनिषद् पढ़ाने वाले ब्राह्मण ही उपाध्याय कहलाए। कालांतर में वही उनकी जाति बन गई। व्यास भागवत द्विवेदी त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि जातियों का आधार यही रहा है। इस संदर्भ में बहुत से उदाहरण आर्य जगत के अन्य विद्वानों के दिये जा सकते हैं। हम जानते हैं कि लाला लाजपत राय जी तो पंडितों के पंडित थे, पर वे आज तक आर्य समाज में भी और बाहर भी लाला ही कहलाते हैं। यही जन्म जाति की विडंबना है। लाला जी ने ऋषि दयानंद को अपना मानस पिता और आर्य समाज को अपनी माता माना है। परन्तु जो उन्हें सत्य लगा, वह कहकर चले गए। हम आर्यसमाजी ही उसे स्वीकार नहीं करते हैं और उस पर आचरण नहीं करते हैं, तो भला सनातनी क्या करेंगे जो आज भी स्वामी करपात्री की जन्मतिथि 22 जुलाई को धर्म सम्राट के रूप में मनाते हैं। यह वही धर्म सम्राट है जिसने ऋषि दयानंद और आर्य समाज, दोनों की कटु आलोचना की है, जिसका सटीक उत्तर वैदिक विद्वान पंडित विशुद्धानंद मिश्र ने विस्तार से 500 पृष्ठों की पुस्तक लिखकर दिया है। तथाकथित धर्म सम्राट करपात्री जी ने जब देखा कि काशी के विश्वनाथ मंदिर में शूद्र–जाति के हिन्दुओं ने प्रवेश करके अपवित्र कर दिया है तो उसने फतवा जारी किया था कि यदि शूद्र उस मन्दिर में भी प्रवेश करने की मूर्खता करेंगे तो वह एक और नया मंदिर बनवाएगा।

हम ऋषि भक्तों और आर्य समाज में आस्था रखने वाले आर्य समाज को एक प्रगतिशील संगठन बनाए रखना चाहते हैं और उसे सार्वभौम स्वरूप देना चाहते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि हिन्दुओं में प्रचलित अस्पृश्यता का अभिशाप उनके सम्मान पर एक बट्टा था और इस पाप का दुष्परिणाम सम्पूर्ण राष्ट्र भुगत रहा था। जब कभी राजनैतिक नेता स्वराज्य की मांग रखते थे तो उनके सामने उनके पापों को रख कर उनका मुंह बद कर दिया जाता था कि जो लोग अपने ही समाज के एक तिहाई लोगों को गुलाम बनाये हुए हों और उनको पैरों तले कुचल रहे हों, उन्हें विदेशियों द्वारा किये गये अत्याचारों के विरुद्ध शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं था। स्वामी श्रद्धानन्द जाति प्रथा के विरुद्ध संघर्ष करने में अग्रणीय रहे। जातपांत–तोड़क– मण्डल के संस्थापकों में से एक मुख्य कार्यकर्ता श्री सन्तराम बी0ए0 ने अपने संस्मरण में लिखा है–''कुछ मित्रों के साथ मिलकर मैंने सन् 1922 में लाहौर में जातपांत–तोड़क–मण्डल स्थापित किया था। हमें चारों ओर से हतोत्साहित किया जाता था। मुझे पूरी तरह से स्मरण है कि स्थानीय आर्य नेताओं के निष्क्रिय प्रतिरोध के कारण एक वर्ष हमें अपने वार्षिक सम्मेलन के लिए कोई प्रधान मिलना कठिन हो गया था।

स्वामी श्रद्धानन्द उस वर्ष लाहौर आर्यसमाज से कुछ अप्रसन्न थे। उन्होंने उसके वार्षिकोत्सव में आने से इन्कार कर दिया पर जातपांत तोड़क मण्डल की प्रार्थना पर उन्होने हमारा प्रधान बनना स्वीकार करके हमारी मान–रक्षा की थी। सभापति के आसन पर बोलते हुए उन्होंने कहा था–'मुझे पता नहीं था कि आर्यसमाजी लोग जातपांत तोड़ने से इतना भयभीत हैं। आज इस प्लेटफार्म पर एक भी आर्य नेता को न देख मुझे दुःख हो रहा है। मुझे ऐसा पता होता तो मैं गुरुकुल न बनाकर जातपांत तोड़क मण्डल ही बनाता।' उनकी इस अमर वाणी से मण्डल के कार्यकर्ताओं को बड़ा भारी उत्साह मिला था। वे सदा हमारे लिए प्रकाश–स्तम्भ बने रहे। जातपांत तोड़ने के आन्दोलन की कठिनाइयों को देखकर जब भी मेरा उत्साह भंग होने लगता था, उस ज्योति–स्तम्भ से मैं नवजीवन पाने लगता था। उन्होंने उस घोर अन्धकार के समय में जब पंजाब में परदा प्रथा तक को दूर करना कठिन था, अपनी बेटी और बेटों का विवाह जाति भेद को तोड़कर करते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था।''

स्वामी जी दलितोद्धार, शुद्धि, गुरुकुलीय शिक्षा आदि कार्यों में सदैव तत्पर रहे। 'हरिजन' के समान अस्पृश्य कहलाने वाले लोगों के लिए दलित शब्द का प्रयोग करने वालों में वह अग्रणी थे। वे दलितोद्धार के कार्य में इस वर्ग के लोगों के साथ खान–पान आदि का सब व्यवहार सर्वथा खोल देने के पक्ष में थे। उनका विचार था कि अस्पृश्यता के कलंक को हिन्दू समाज के माथे से मिटाना समस्त हिन्दुओं का कर्तव्य है। वे समय–समय पर अपने व्याख्यानों और पत्रिकाओं के माध्यम से दलितोद्धार करने और अस्पृश्यता को जड़ से मिटाने की अपील करते रहते थे। इस अभियान को सफल बनाने के लिए उन्होंने सन् 1913 में दिल्ली में दलितोद्धार–सभा का गठन किया था। स्वामी जी को सन् 1921 में इस सभा का अध्यक्ष बनाया गया था। दिल्ली और आसपास के नगरों में उनके नेतृत्व में हजारों दलितों का उद्धार किया गया था। हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्मों में प्रवेश करने से रोकने के अतिरिक्त उनके द्वारा अपने शुद्धि कार्यक्रम में बड़ी भारी संख्या में अन्य धर्मों में प्रविष्ट हुए लोगों को शुद्ध कर वैदिक धर्म की दीक्षा देकर शुद्ध किया गया था। यही नहीं, उनकी जीवन पद्धति में सुधार लाया गया और उन्हें अन्य हिन्दू जाति के लोगों के समान आदरपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया गया था। दलितोद्धार के लिए उनकी तीव्र इच्छा का पता उस सन्देश से भी मिलता है जो उन्होंने तार द्वारा जून 1924 में अहमदाबाद में होने वाले कांग्रेस कमैटी के अधिवेशन के अवसर पर भेजा था। इस तार में कहा गया था– ''कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमैटी के प्रान्तीय हिन्दू सभासदों को, जो नौकर रख सकते हैं, कहा जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखें, उनमें एक नौकर अवश्य अछूतों में से हो। जो ऐसा न कर सकें, वह कांग्रेस के पदाधिकारी न रहें। यदि यह सम्भव न हो तो अस्पृश्यता के प्रश्न को हिन्दू समाज पर ही छोड़ दिया जाए।''

रायसाहब रामविलास शारदा ने अपने संस्मरण में उद्धृत किया है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने उनसे अन्तिम भेंट के समय कहा था कि उन्होंने अपना शेष जीवन अछूतोद्धार और शुद्धि संगठन में लगाने का निश्चय किया था जिसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती है। जीवन के अन्तिम क्षणों तक स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने इस व्रत का पालन किया था। ऐसे हुतात्मा को उनके बलिदान विवस के अवसर पर शत् शत् नमन।

'प्राचीन वैदिक पर्व दीपावली एवं ऋषि दयानन्द का महाप्रस्थान दिवस'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

स्वभाव से मनुष्य सुख प्राप्ति का इच्छुक रहता है। वह नहीं चाहता कि उसके जीवन में कभी किसी भी प्रकार का दुःख आये। सुख प्राप्ति के लिये सद्कर्म व धर्म के कार्य करने होते हैं। अतः सत्कर्मों से युक्त प्राचीन वेदों पर आधारित वैदिक धर्म का पालन करते हुए मनुष्य अपने जीवन में सुखों की अभिव्यक्ति के लिये पर्वों को मनाते हैं। हमारे देश में मुख्य पर्व चार ही होते हैं। इन्हें श्रावणी या रक्षाबन्धन, विजयादशमी, प्रकाश पर्व दीपावली तथा होली के नाम से जानते हैं। हमारे देश में आदि काल से महाभारत काल तक वर्णव्यवस्था रही है। प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति में इसका उल्लेख मिलता है। प्राचीन वर्ण व्यवस्था मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित थी। वेदों तथा वैदिक साहित्य में सबको वेदों सहित ज्ञान विज्ञान को अर्जित करने का अधिकार था। शिक्षा सबके लिये पक्षपातरहित तथा अनिवार्य होती थी। वर्ण शिक्षा प्राप्ति के पश्चात किसी मनुष्य की योग्यता व उसके कार्यों वा व्यवसाय को प्रदर्शित करता था जिसका चुनाव मनुष्य स्वयं व उसकी योग्यता के आधार पर उसके आचार्य करते थे।

समाज में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र होते थे। ब्राह्मण का कार्य ज्ञान व विज्ञान की उन्नति सहित वेदों का पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना व कराना तथा दान देना व लेना होता था। हमारे सभी ऋषि मुनि, योग साधक तथा उपाध्याय व अध्यापक ब्राह्मण कहलाते थे। वैदिक काल में जन्मना जाति व्यवस्था का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। रामायण एवं महाभारत हमारे प्राचीन सामाजिक व्यवस्था के इतिहास ग्रन्थ हैं। इनमें कहीं जन्मना जातिवाद की गन्ध भी नहीं है। यह भी सत्य है कि इन रामायण एवं महाभारत आदि ग्रन्थों में मध्यकाल के आचार्यों ने अपनी वेद विरोधी मान्यताओं व परम्पराओं को मानने व मनवाने के लिये प्रक्षेप किये जिससे लोगों में भ्रान्तियां उत्पन्न हुईं। इसके प्रभाव से समाज में विकृतियां आईं परन्तु मूल वेद और वैदिक साहित्य कभी किसी प्रकार की ज्ञान विरुद्ध परम्परा के पोषक नहीं रहे। वेदों में शुद्ध ज्ञान है जिसका पालन करना सब मनुष्यों का धर्म होता है और यह पूर्णतया पक्षपातरहित होने से इसमें किसी भी

मनुष्य को किसी भी प्रकार की शंका एवं विरोध न होकर सन्तोष ही होता है। वैदिक वर्णव्यवस्था में सबको समान रूप से उन्नति के अवसर मिला करते थे। ब्राह्मण वेदों के ज्ञानी होते थे और समाज का उपकार करने के लिये इतर तीन वर्णों को शिक्षित करते व उन्हें उनके जीवन में उपस्थित क्षमताओं को विकसित करके उन्हें समाज के लिये लाभकारी बनाते थे। ब्राह्मण श्रावणी पर्व को मनाते हैं जिसके केन्द्र में ज्ञान व विज्ञान के विस्तार की भावना को केन्द्रित किया जाता था। यह पर्व सभी गुरुकुलों के ब्रह्मचारी अपने आचार्यों तथा समाज में पुरोहित वर्ग मनाता था जिसमें अन्य सभी वर्णों का सहयोग रहता था।

ब्राह्मण वर्ण से इतर क्षत्रिय विजयादशमी पर्व को मनाते थे जिसमें देश व समाज की रक्षा के विषयों में रखकर कार्यक्रमों को आयोजित किया जाता था। इसी प्रकार से वैश्य जिसमें व्यापारी, कृषक तथा गोपालक आदि आते हैं, दीपावली का पर्व मनाते थे। वैदिक काल में सभी पर्वों को मनाते हुए परिवारों में अग्निहोत्र यज्ञ किये जाते थे और मिष्ठान्न बनाकर उसका वितरण किया जाता था। सामाजिक उन्नति के अनेक कार्य किये जाते थे। लोग आपस में मिलते थे, शुभकामनाओं का आदान प्रदान करते थे और एक दूसरे से मिलकर परस्पर कुशल क्षेम पूछते थे। इन पर्वों को मनाने में किसी भी प्रकार के अन्धविश्वासों व सामाजिक कुरीतियों का कोई स्थान नहीं होता था। सभी परम्परायें ज्ञान पर आधारित होती थी जिससे समाज में सुख का वातावरण उत्पन्न होता था। दीपावली पर्व कार्तिक अमावस्या पर मनाया जाता था। इस अवसर पर लोग अपने घरों पर चावल की नई फसल से उत्पन्न खील को बना कर यज्ञों में गोघृत के साथ मिलाकर इसकी आहुतियां देते थे तथा उसका भक्षण करते व परस्पर वितरण आदि की परम्परा भी रही है। इससे समाज में एकरसता उत्पन्न होती थी। दीपावली के अवसर पर ग्राम व नगर सभी स्थानों के लोग अपने घरों की लिपाई व पुताई, रंग–रोगन आदि करके स्वच्छ करते थे। नये वस्त्रों को धारण करते थे। आगे शीतकाल से बचाव के उपयों पर विचार करते थे और घरों में प्रसन्नता के चिन्ह रंगोली आदि बना कर प्रसन्न होते थे। रात्रि को अपने अपने घरों में सभी स्थानों पर दीपक जलाकर प्रकाश किया जाता था। दीपावली के अवसर पर यज्ञ करना एवं प्रकाश करने के लिए दीप जलाना तो उचित होता है परन्तु पटाखें जलाना उचित नहीं होता। इसका कारण यह है कि इससे हमारी वायु जिसे हम अपने शरीर व फेफड़ों में श्वांस लेकर भरते हैं तथा जिससे हमारा रक्त शुद्ध होता है और हम स्वस्थ रहते हैं, वह प्राणवायु प्रदुषित होकर हमारे स्वास्थ्य के लिये हानिप्रद हो जाती है। अतः जहां तक हो सके पटाखों को जलाने सहित ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिये जिससे कि वायु व जल आदि में प्रदुषण हो। दीपावली का पर्व उत्साह व उमंग से अपने घरों को स्वच्छ करके, यज्ञ का अनुष्ठान करके तथा रात्रि में दीपक जला कर मनाना चाहिये। मिष्ठान्न का अपने मित्रों व सभी पड़ोसियों में वितरण करना चाहिये। यही दीपावली मनाने का उचित तरीका है। वैश्य व वाणिज्य से जुड़े लोग इस दिन अपने व्यवसाय के विषय में विचार कर हानि, लाभ तथा उसके विस्तार पर विचार कर सकते हैं।

दीपावली के ही दिन वैदिक धर्म, संस्कृति तथा ईश्वरीय ज्ञान वेद के पुनरुद्धारक, समाज सुधारक, देश को स्वदेशी राज अर्थात् आजादी के मन्त्रदाता, शिक्षा व ज्ञान के विस्तार के प्रणेता, अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए कृतसंकल्प व इसके लिये अहर्निश कार्य करने वाले ऋषि दयानन्द का मोक्ष व निर्वाण दिवस है। इसे 'महा–प्रस्थान' दिवस भी कहा जाता है। इससे पूर्व ऋषि दयानन्द जैसे किसी विदित ऋषि या महापुरुष ने न तो उनके जैसे कार्य किये

और न ही उनकी तरह से अपने देह का त्याग किया। उन्होंने देहत्याग करते हुए कहा था कि 'हे ईश्वर! तुने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हों।' किसी मनुष्य के ईश्वर विश्वास का यह अपूर्व उदाहरण है। इसके बाद तो ऋषि के अनेक अनुयायियों ने अपने मृत्यु समय ईश्वर को स्मरण करते हुए प्रसन्नतापूर्वक अपने प्राणों का त्याग किया।

ऋषि दयानन्द के आविर्भाव के समय देश परतन्त्र होने सहित धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वासों से ग्रस्त था। विद्या व शिक्षा का समाज में उचित प्रचार नहीं था। अन्धविश्वासों, कुरीतियों की भरमार थी। जन्मना जातिवाद ने मनुष्य समाज को आपस में बांटा हुआ था। छुआछूत, अन्याय व शोषण का बोलबाला था। बाल विवाह, बाल विधवाओं की दयनीय दशा आदि ने मनुष्य जाति को कंलकित किया हुआ था। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द ने वेदों के आधार पर धर्म का सत्य स्वरूप प्रस्तुत कर उसका जन–जन में प्रचार किया। सभी अन्धविश्वासों एवं मिथ्या परम्पराओं को दूर किया। बाल विवाह का निषेध करने सहित पूर्ण युवावस्था में गुण, कर्म व स्वभाव के आधार पर विवाह करने का सर्वत्र प्रचार किया। विधवाओं को उनके सभी मानवोचित उचित अधिकार प्रदान करायें। आपदधर्म के रूप में पुनर्विवाह को भी स्वीकार किया।

देश को आजाद कराने के लिये ऋषि दयानन्द ने स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया। ईश्वर की वैदिक रीति से सन्ध्या, पूजा या उपासना सहित वायु शोधक तथा ज्ञान प्रापक वैदिक अग्निहोत्र यज्ञों को प्रचलित किया। लोगों की अविद्या दूर करने के लिये सत्यार्थप्रकाश जैसा एक अपूर्व क्रान्तिकारी ग्रन्थ दिया। मनुष्य के अधिकांश दुःखों का कारण अविद्या होती है। ऋषि दयानन्द ने अविद्या को पूर्णतया दूर करने वाला ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश रचा व हमें प्रदान किया जिससे आज हम अविद्या से मुक्त हो सके हैं। सत्यार्थप्रकाश ऐसा ग्रन्थ है जो सत्य धर्म से परिचित कराने व उसके पालन का विधान करता है और मनुष्यों को सभी अन्धविश्वासों से दूर व मुक्त करता है। ऐसे अनेकानेक कार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित वेद प्रचार आन्दोलन नामी संस्था आर्यसमाज व उनके अनुयायियों ने किये हैं। उनके प्रयत्नों से ही देश में अन्धविश्वास व सामाजिक कुरितियां दूर हुई हैं। विद्या व ज्ञान का प्रचार प्रसार हुआ है। हमारा देश अध्यात्म से ओतप्रोत विश्व का एक प्रतिष्ठित देश बना है। ऋषि की इन देनों के कारण ही दीपावली पर्व को उनके मोक्ष व निर्वाण दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन लोग घरों की शुद्धि कर विशेष अग्निहोत्र यज्ञ करते और आर्यसमाजों में ऋषि जीवन की प्रासंगिकता तथा देश व समाज के निर्माण में उनके योगदान की चर्चा करते हैं। सभी वेद धर्म प्रेमी सभी प्रकार के अन्धकार को दूर कर ज्ञान को प्राप्त करने का संकल्प लेते हैं। सत्य का ग्रहण एवं असत्य का त्याग करने की प्रतीज्ञा भी करते हैं। इसी प्रकार से दीपावली पर्व को मनाना उचित प्रतीत होता है।

हमें लगता है कि दीपावली के दिन सभी देशवासियों को सत्यार्थप्रकाश को पढ़ने का संकल्प लेकर तथा इस संकल्प को पूरा करने का मन में उत्साह भरकर पर्व को मनाने से हमें जन्म जन्मान्तर में अवर्णनीय लाभ होगा। इसका कारण यह है कि हमारा भविष्य हमारे वर्तमान के निर्णय व कार्यों का परिणाम होता है। इसी प्रकार से हमें दीपावली पर्व को मनाना चाहिये जिससे हमारा समाज विश्व का उन्नत समाज बने तथा हमारा देश भौतिक व आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बनने सहित सभी प्रकार के अज्ञान, अविद्या, अन्याय, अभाव व अन्धविश्वासों सहित कुरीतियों व मिथ्या परम्पराओं से पूर्णतया मुक्त हो।

-बलिदान दिवस 23 दिसम्बर पर-

'महान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के उन्नयन में स्वामी श्रद्धानन्द जी का महान योगदान है। उन्होंने अपना सारा जीवन इस कार्य के लिए समर्पित किया था। वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को उन्होंने अपने जीवन में धारण किया था। देश भक्ति से सराबोर वह विश्व की प्रथम धर्म—संस्कृति के मूल आधार ईश्वरीय ज्ञान ''वेद'' के अद्वितीय प्रचारकों में से एक थे। शिक्षा जगत, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, समाज व जाति सुधार, बिछुड़े हुए धर्म बन्धुओं की शुद्धि, दलितों के प्रति दया से भरा हृदय रखने वाले तथा उनकी रक्षा में तत्पर, आर्यसमाज के महान नेताओं में से एक, आदर्श सद्गृहस्थी, कर्तव्य पालन में अपना सर्वस्व व प्राण समर्पित वाले अद्वितीय महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि जिसे जानकर प्रत्येक सात्विक हृदय वाला व्यक्ति उनका अनुयायी बन जाता है। महर्षि दयानन्द के बाद आर्यसमाज और देश में उनके समान गुणों वाला व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ। प्रसिद्ध आर्य वैदिक संन्यासी स्वामी डा. सत्य प्रकाश सरस्वती ने उनसे सम्बन्धित अपने कुछ संस्मरणों को प्रस्तुत करने के साथ उनके कार्यों पर अपनी राय भी दी है। इसी पर आधारित हमारा यह लेख है।

सन् 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अवसर पर लखनऊ में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने महात्मा मुंशीराम के दर्शन किए थे। 1914—15 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे और जनता में गांधी जी की लोकप्रियता बढ़ रही थी। नरम दल के नेता कांग्रेस से अलग हो गए थे और उन्होंने अपनी आल इण्डिया लिबरल फैडरेशन संघटित करना आरम्भ कर दिया था। गरम दल के व्यक्तियों के हृदय सम्राट् लोकमान्य तिलक जी थे। 8 अप्रैल, 1915 को गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम के आश्रम में मिस्टर गांधी आये और ''महात्मा'' गांधी बन करके वहां से निकले। महात्मा मुंशीराम जी ने ही गांधी जी को गुरुकुल में पधारने पर पहली बार उनको 'महात्मा' शब्द से सम्बोधित किया था, यह महात्मा शब्द इसके बाद आजीवन उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यही गांधी जी के महात्मा गांधी बनने का इतिहास है। सन् 1916 की कांग्रेस में स्वामी सत्यप्रकाश जी ने गांधी जी और मुंशीराम जी दोनों को राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्बन्धी एक समारोह में देखा था। दोनों की वेशभूषा की रूपरेखा बराबर उनकी आंखों के समाने बनी रही, ऐसा उन्होंने अपने लेख में वर्णित किया है। तब वहां महात्मा मुंशीराम जी भव्य दाढ़ी, सुदृढ़ शरीर और गले के नीचे पीत वस्त्र तथा गांधी जी अपनी काठियावाड़ी

पगड़ी, अंगरखा और नंगे पैर उपस्थित थे। इसके बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयाग आ गये। वहां 'आर्यकुमार सभा' के उत्सव पर स्वामी श्रद्धानन्द जी आये थे और तब स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उन्हें निकट से देखा। स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रयाग में नयी सड़क के एक दुमंजिले मकान में ठहराया गया था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने यह भी वर्णन किया है कि 26 दिसम्बर 1919 को अमृतसर कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द स्वागताध्यक्ष थे और पं. मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष। किम्वदन्ती है कि दोनों ने एक–दूसरे को पहचाना, दोनों सहपाठी थे बनारस, इलाहाबाद, आगरा या बरेली में से किसी स्थान पर। महात्मा मुंशीराम जी की प्रारम्भिक शिक्षा बरेली में हुई, 1873 में उच्च शिक्षा क्वीन्स कालेज बनारस में, 1880 और पुनः 1888 में कानूनी शिक्षा लाहौर में। महात्मा मुंशीराम जी का नाम श्रद्धानन्द संन्यास के बाद पड़ा। संन्यास उन्होंने 12 अप्रैल 1917 को मायापुर (कनखल) में लिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सन् 1915–16 में इन्द्र विद्वद्यावाचस्पति और पौराणिकों की बातें सुना करते थे, क्योंकि 1912–16 तक सनातन धर्म सभाओं की बड़ी धूम थी। ये सनातन धर्म सभाएं धीरे–धीरे निष्क्रिय हो गयीं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने संस्मरणों में बताया है कि सन् 1925 ई. में मथुरा में जो महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनायी गयी थी उसके अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे––तब तक उनका स्वास्थ्य गिर चुका था और महात्मा नारायण स्वामी जी वस्तुतः उस समारोह के कार्यकर्त्ता अध्यक्ष थे। आनन्द भवन में होने वाली कांग्रेस की बैठकों में 1922 ई. के बाद भी स्वामी जी इलाहाबाद कई बार आये। 1921 ई. के अप्रैल मास में पं. मोतीलाल जी की पुत्री विजयलक्ष्मी के विवाह में भी स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्मिलित हुए थे पर मोपला काण्ड (मालाबार, केरल) के बाद श्रद्धानन्द जी कांग्रेस से धीरे–धीरे अलग हो गये। स्वामी दयानन्द ने मृत्यु के समय आर्यसमाज का नेतृत्व किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं छोड़ा था। ईश्वर के भरोसे मानों वे चल दिये। 1883 ई. के बाद स्वयं ही आर्यसमाज में 'व्यक्तियों' का प्रादुर्भाव हुआ। इन व्यक्तियों में श्रद्धानन्द का इतिहास ही आर्यसमाज का इतिहास है। इस युग के अन्य लोगों में महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी नित्यानन्द का भी अभूतपूर्व व्यक्तित्व था।

स्वामी सत्यप्रकाश जी के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने बीसवीं शती के प्रथम पाद में भारत के इतिहास में मार्मिक भूमिका निभायी। आर्यसमाज में दयानन्द के बाद श्रद्धानन्द–सा दूसरा व्यक्ति देखने में नही आया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की 1924 ई. में प्रकाशित 'कल्याण–मार्ग का पथिक' आत्मकथा को पढ़ा। उनके पास उनका और गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द जी के सहयोगी आचार्य रामदेव जी द्वारा सम्पादित 'द आर्यसमाज एण्ड इट्स डिटैक्टर्स–ए विण्डिकेशन' प्रसिद्ध ग्रन्थ था। 'दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तान' उन्होंने नहीं पढ़ी। (उर्दू में लिखित यह ग्रन्थ आर्यसमाज के आन्तरिक विग्रह की कष्ट कथा है। इसका अनुवाद हरिद्वार निवासी हिन्दी कवि श्री सुमन्त सिंह आर्य ने किया है जो हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डोन–सिटी से कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुका है। कुछ विद्वान इसमें समाहित आलोचनाओं के कारण इसके प्रकाशन की आवश्यकता नहीं समझते थे। श्रद्धानन्द जी विषयक सबसे अधिक बातें स्वामी सत्यप्रकाश जी को स्वामी श्रद्धानन्द जी पर आस्ट्रेलियाई प्रो. जे. टी.एफ. जॉर्डन्स की पुस्तक से ज्ञात हुईं।

स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर कई टिप्पणियां की हैं। वह लिखते हैं कि गुरुकुल के अनगिनत स्नातकों के कुलगुरु महात्मा मुंशीराम थे, न कि श्रद्धानन्द। मुंशीराम

और श्रद्धानन्द तो दो अलग व्यक्तित्व हैं। मुंशीराम के रूप में वे महात्मा थे, गांधी के अत्यन्त निकट, गुरुकुलीय प्रणाली के उन्नायक, शिक्षा के क्षेत्र में अनन्य प्रयोगी तथा टैगोर की समकक्षता के शिक्षाशास्त्री। दूसरा उनका स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का रहा––सम्प्रदायवादिता मिश्रित राष्ट्र–उलझनों में फंसे हुए––कभी मालवीय जी के साथ, कभी हिन्दू महासभा के साथ, कभी उनसे दूर भागते हुए अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, कभी–कभी निर्वाचनों की उलझनों में फंस जाने वाले व्यक्ति। उसका उन्हें पुरस्कार मिला––23 दिसम्बर, 1926 ई. को सायंकाल 4 बजे दिल्ली में अब्दुल रशीद की गोलियों से बलिदान। वे सदा के लिए अमर हो गए। अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती खोलकर खड़ा होने वाला वीर राष्ट्रभक्त संन्यासी श्रद्धानन्द का एक यह तेजस्वी रूप था। महर्षि दयानन्द के बलिदान के बाद 7 मार्च, 1897 को एक विधर्मी आततायी द्वारा वैदिक धर्म के प्रथम शहीद पण्डित लेखराम की पंक्ति में खड़ा कर देने वाला ऋषि दयानन्द का असीम भक्त अमर शहीद श्रद्धानन्द।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान पर भारत के लौहपुरुष सरदार पटेल ने अपनी श्रद्धांजलि में कहा, 'स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आंखों के सामने आकर खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में थे। स्वामी श्रद्धानन्द छाती खोलकर सामने आते हैं और कहते हैं, 'लो, चलाओ गोलियां।' उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।' वीर विनायक सावरकर ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि में कहा, 'इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिन्दू–जाति पर तथा हिन्दुस्तान की बलि–वेदी पर अपने जीवन की आहुति दे दी। उनका सम्पूर्ण जीवन विशेषकर उनकी शानदार मौत हिन्दू–जाति के लिए एक स्पष्ट सन्देश देती है। ..... हिन्दू–राष्ट्र के प्रति हिन्दुओं का क्या कर्तव्य है––इसे मैं स्वामी जी के अपने शब्दों में ही रखना चाहता हूं। सन् 1926 के 29 अप्रैल के ''लिबरेटर'' पत्र में वे लिखते हैं ''स्वराज्य तभी सम्भव हो सकता है जब हिन्दू इतने अधिक संगठित और शक्तिशाली हों जाएं कि नौकरशाही तथा मुस्लिम धर्मोन्माद का मुकाबला कर सकें।'' उपर्युक्त उद्धरण से हिन्दू जाति की तीव्र मांग का पता चल सकता है। और विशेषकर ऐसे नाजुक समय में जबकि इस पर चारों ओर से आघात और आक्रमण हो रहे हों।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और उसे अपने खून से सींचा। आज यह संस्था अपने मूल उद्देश्य व गौरवपूर्ण अतीत से दूर हो चुकी है। आगामी 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का 95 वां बलिदान दिवस है। अतः इस अवसर पर उनके पावन जीवन चरित्र का अध्ययन कर अपने जीवन को पुण्यकारी बनाया जा सकता है। धर्म की वेदी पर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र व उनके ग्रन्थों का अध्ययन कर उनके जैसा व उनकी अपेक्षाओं के अनुरुप बनकर ही उन्हें श्रद्धांजलि दी जा सकती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रायः सभी ग्रन्थों को 'श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' के नाम से लगभग 33 वर्ष पूर्व 11 खण्डों में प्रकाशित किया गया था। इसका नया भव्य एवं आकर्षक संस्करण एक जिल्द में 'मैसर्स विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408 नई सड़क, दिल्ली' से दो खण्डों में प्रकाशित किया गया है। हम पाठकों को इसे पढ़ने का आग्रह करते हैं। आईये, स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन व कार्यों को जानकर उनसे प्रेरणा ग्रहण करें और वैदिक धर्म व संस्कृति की सेवा कर अपने जीवन को सफल करें। आगामी बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि।

'ईश्वर सृष्टि की रचना व संचालन क्यों व किसके लिए करता है?'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य, आस्तिक हो या नास्तिक, बचपन से ही उसके मन में सृष्टि व इसके विशाल भव्य स्वरूप को देखकर अनेक प्रश्न व शंकायें होती हैं। एक प्रश्न यह होता है कि इस सृष्टि का रचयिता कौन है और उसने किस उद्देश्य से इसकी रचना की है? इसका उत्तर या तो मिलता नहीं है और यदि मिलता भी है तो प्रायः यह होता है कि ईश्वर ने इस सृष्टि को बनाया है अथवा यह अपने आप बनी है। सृष्टि को बनाने वाला वह ईश्वर कौन है, कैसा है, कहां है, वह क्या करता है, आदि प्रश्नों का सत्य व यथार्थ उत्तर हमें अपने घर के बड़ो व मनीषियों से भी नहीं मिलता है। हमारे अनेक मतों के धर्माचार्य व उनकी पुस्तकें भी इस विषय पर यथार्थ रूप में प्रकाश नहीं डालती हैं। इन सभी प्रश्नों का समाधान न होने से मनुष्य के भीतर ही यह शंकायें व प्रश्न विलीन होकर खो जाते हैं। संसार में लाखों व करोड़ों में से कोई एक जिज्ञासु ऐसा भी होता है कि जो इन प्रश्नों की उपेक्षा नहीं करता और इनके हल ढूंढने में ही अपना जीवन लगा देता है। ऐसे ही एक महापुरुष का नाम था ऋषि दयानन्द सरस्वती। ऋषि दयानन्द को अपनी आयु के चौदहवें वर्ष में शिवरात्रि के दिन शिव की पूजा व उपासना करते हुए शिव मन्दिर में स्थित शिव की पिण्डी वा मूर्ति के सच्चे शिव होने में शंका हुई थी। उन्होंने अपने पिता व धर्म के आचार्यों से अपनी शंकाओं के उत्तर जानने का प्रयास किया था परन्तु उनको किसी से सत्य व यथार्थ बृद्धिसंगत व विवेकपूर्ण उत्तर नहीं मिले। इस कारण अध्ययन करते हुए उन्हें अपने माता–पिता के गृह व परिवारजनों को छोड़कर सच्चे ईश्वर के सत्यस्वरूप को जानने सहित मृत्यु रूपी क्लेश पर विजय पाने जैसे अनेक रहस्यमय प्रश्नों की खोज में जाना पड़ा था। सन् 1836 से सन् 1863 तक वह अपनी सभी शंकाओं के समाधान तथा विद्या प्राप्ति में लगे रहे। इस अवधि में उनको न केवल अपने प्रश्नों के उत्तर मिले अपितु वह योग विद्या में निष्णात भी हुए। वह ईश्वर साक्षात्कार व प्रत्यक्ष करने की ध्यान व समाधि की प्रकिया के अभ्यासी भी बन गये। उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान से हम ईश्वर व सृष्टि से जुड़े सभी प्रश्नों के समाधान जानते हैं। हमारे ज्ञान का आधार ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि अनेक ग्रन्थ हैं। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में जो विद्या व ज्ञान है उसका आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों के वेदानुकूल कथन, मान्यतायें व सिद्धान्त हैं जिन्हें महाभारत युद्ध के बाद लोगों ने विस्मृत कर दिया था। महाभारत के बाद के काल में अवैदिक, अज्ञान व अन्धविश्वासों से युक्त मूर्तिपूजा, अवतारवाद की कल्पना, मृतक श्राद्ध व फलित ज्योतिष आदि की कृत्रिम मिथ्या मान्यताओं तथा विधि विधानों ने समाज में स्थान बना लिया था जो आज भी बना हुआ है। ऋषि दयानन्द ने इन्हीं अवैदिक विधानों व परम्पराओं को मनुष्य जाति की अवनति सहित देश की परतन्त्रता एवं अन्य दुःखों का मुख्य कारण बताया है जो कि उचित ही है।

यह विशाल सृष्टि मनुष्य एवं सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। सृष्टि की रचना एवं संचालन एक अपौरूषेय सत्ता के कार्य हैं। अपौरूषेय का अर्थ होता है कि जिस कार्य को मनुष्य नहीं कर सकते तथा जिसे मनुष्य के अतिरिक्त अन्य चेतन सत्ता जो अनादि, नित्य, सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान एवं सर्वव्यापक आदि गुणों से युक्त है, सम्पन्न करती है। इस

सत्ता जो कि ईश्वर की सत्ता है, उसका विस्तृत उल्लेख व परिचय सृष्टि की रचना के आरम्भ में वेदों में ईश्वर द्वारा स्वयं कराया गया है। वेदों के अतिरिक्त भी जब हम वैज्ञानिक रीति से तर्क व वितर्क पूर्वक विचार करते हैं तो हमें ईश्वर का सत्यस्वरूप उपस्थित होता है। वेदों में ईश्वर को सत्य, चेतन और आनन्दस्वरूप बताया गया है। ईश्वर निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। वह जीवों को उनके पूर्वजन्मों के कर्मानुसार भिन्न भिन्न योनियों में जन्म देकर उनके पूर्वकर्मों का सुख व दुःखरूपी भोग कराने वाला है। वह सृष्टि की उत्पत्ति, पालन व प्रलय सहित सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि को करके चार ऋषियों को उत्पन्न करता है और उन्हें एक–एक वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान देता है। वेदज्ञान के मिलने और ऋषियों द्वारा उनके प्रचार से ही इतर सभी मनुष्य ईश्वर, आत्मा, कर्तव्य व अकर्तव्य सहित ईश्वर की उपासना, परोपकार तथा दान आदि के अपने श्रेष्ठ कर्तव्यों से परिचित होते हैं। इस प्रकार से सृष्टि प्रचलन में आती है और मनुष्य ईश्वर प्रदत्त शरीर व इसमें विद्यमान बुद्धि, मस्तिष्क, ज्ञान व कर्मेन्द्रियों के सहयोग से पुरुषार्थ के द्वारा अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहते हैं और उनके द्वारा देश व समाज के लोगों के जीवन को सुख व सुविधाओं से युक्त करते रहते हैं।

ईश्वर ने सृष्टि क्यों बनाई है, इसके लिये हमें ईश्वर, जीव और प्रकृति की अनादि और नित्य सत्ताओं तथा उनके गुण, कर्म, स्वभाओं सहित इनके द्वारा हो सकने व की जाने वाली सम्भव क्रियाओं को समझना होगा। इस ब्रह्माण्ड में एक ही ईश्वर है। उसके मुख्य गुण, कर्म व स्वभाव वहीं है जो उपर्युक्त पंक्तियों में दिये गये हैं। जीवात्मा ईश्वर से पृथक अस्तित्व, कार्य व व्यवहार की दृष्टि से एक स्वतन्त्र सत्ता है। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु उनके फल भोगने में ईश्वर के अधीन वा परतन्त्र हैं। जीवात्मा सत्य व चेतन पदार्थ है। यह अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान, आकार रहित, सूक्ष्म, एकदेशी, ससीम, ईश्वर से व्याप्य, अनादि, नित्य, अविनाशी, अमर, शस्त्रों से अकाट्य, अग्नि में न जलने वाला, वायु से न सूखने वाला, कर्म–बन्धनों में बंधा हुआ, जन्म–मरण धर्मा, वैदिक मार्ग पर चल कर वा विद्या प्राप्त कर मृत्यु से पार होने वा मोक्ष प्राप्त करने वाली सत्ता है। ब्रह्माण्ड में जीवों की संख्या अनन्त हैं। इन्हीं जीवों के पूर्वजन्म के कर्मों का सुख व दुःखरूपी फल देने के लिये ईश्वर प्रकृति नामक पदार्थ व सत्ता से जो कि अत्यन्त सूक्ष्म है, इस सृष्टि को बनाते हैं।

प्रकृति सत्व, रज व तम गुणों वाली त्रिगुणात्मक सत्ता है। प्रलय अवस्था में यह पूरे ब्रह्माण्ड में फैली हुई होती है। ईश्वर प्रकृति के सूक्ष्म कणों में भी व्यापक रहता है। वह अपनी सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता से इस प्रकृति में विकार उत्पन्न कर इसे महत्तत्व आदि अनेक पदार्थों में परिवर्तित करते हैं। ऋषि दयानन्द ने सांख्यसूत्रों के आधार पर सत्यार्थप्रकाश में मूल प्रकृति की सत्ता में सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ होने पर होने वाली विकृतियों वा रचनाओं का सारगर्भित वर्णन किया है। वह लिखते हैं कि (सत्व) शुद्ध (रजः) मध्य (तमः) जाड्य अर्थात् जड़ता, यह तीन वस्तु मिलकर इनका जो एक संघात है उस का नाम प्रकृति है। इस से महत्तत्व बुद्धि, उस से अहंकार, उससे पांच तन्मात्रा सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन, पांच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पांच भूत ये चौबीस और पच्चीसवां पुरुष अर्थात् जीव और परमेश्वर है। इन में से प्रकृति साम्यवस्था में अविकारिणी और महत्तत्व अहंकार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य और इन्द्रियां मन, अहंकार का कार्य तथा स्थूल भूत सूक्ष्म भूत का कार्य हैं। पुरुष अर्थात् परमात्मा न प्रकृति का उपादान कारण है और न वह प्रकृति और उसके

किसी विकार का कार्य है। इस प्रक्रिया से ईश्वर ने सत्व, रजः व तमः गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस सृष्टि व इसके सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, ग्रह व उपग्रहादि नाना लोकों का निर्माण किया है। यह भी जानने योग्य है कि बिना किसी सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, चेतन सत्ता के इस सृष्टि की रचना व निर्माण नहीं हो सकता। यदि हो भी जाये, जो कि असम्भव है, तो फिर इसका संचालन ईश्वर के समान चेतन सत्ता के बिना नहीं हो सकता। प्रलय के लिए भी ईश्वर की सत्ता का होना व उसे स्वीकार करना आवश्यक है अन्यथा प्रलय के बाद सृष्टि रचना का कार्य होना सम्भव नहीं होगा। अतः सृष्टि की उत्पत्ति प्रक्रिया का सम्पादन सांख्य दर्शन व ऋषि दयानन्द द्वारा किये गये उसके सूत्रों के अनुवाद व क्रम के अनुरूप ही होता है जो कि वेदों के सर्वथा अनुकूल है।

सृष्टि की उत्पत्ति अनन्त व अगण्य जीवों के कल्याण तथा उनके पूर्वकल्प एवं पूर्वजन्मों में किये शुभ अशुभ व पाप पुण्य कर्मों सहित सुख–दुःख रूपी फल समस्त जीवों को प्रदान करने के लिये की गई है। यही ईश्वर का सृष्टि बनाने का प्रयोजन है। ईश्वर सृष्टि की रचना वा उत्पत्ति करने में सर्वथा समर्थ हैं, यह भी सृष्टि की रचना का कारण है। इस प्रकार से सृष्टि की रचना किसने, क्यों व किसके लिये की है, इन सभी प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है। यही सृष्टि की रचना, क्या, क्यों व कैसे आदि प्रश्नों के सत्य व यथार्थ उत्तर हैं। हमें नहीं पता कि संसार के किसी बड़े वैज्ञानिक ने कभी इस सृष्टि उत्पत्ति के वर्णन को पढ़ने व समझने का प्रयास किया है और यदि किया है तो उसने इसके पक्ष–विपक्ष में क्या टिप्पणी की है? जो भी हो ऋग्वेद के दसवें मण्डल में सृष्टि की रचना का वर्णन किया गया है। वही वर्णन सृष्टि की रचना का सत्य वर्णन है। इसको स्वीकार कर ही जीवों के जन्म–मरण व मनुष्य जन्म के लक्ष्य 'मोक्ष' का भी ज्ञान होता है।

सृष्टि की उत्पत्ति कब हुई इसका उत्तर भी वैदिक साहित्य से मिलता है। इस विषय में यह जानना महत्वपूर्ण है कि ईश्वर का एक दिन 4 अरब बत्तीस करोड़ वर्षों का होता है। इतनी ही अवधि की रात्रि होती है जिसे प्रलय काल कहते हैं। पूरी सृष्टि का काल 14 मन्वन्तरों में विभाजित किया गया है। 1 मन्वन्तर में 71 चतुर्युगी होती हैं। इस प्रकार एक कल्प में कुल 994 चतुर्युगी होती हैं। शेष 6 चतुर्युगी का काल 43.20 लाख X 6 = 2 करोड़ उनसठ लाख 20 हजार वर्षों का होता है। यह समय सृष्टि की उत्पत्ति में लगने वाला समय है। इस अवधि में सृष्टि बनने के बाद मानव की अमैथुनी सृष्टि का आविर्भाव होता है। सृष्टि के आदि काल से ही अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों वा ऋषियों ने मानव सृष्टि संवत् की गणना आरम्भ कर दी थी। इस समय मानव सृष्टि व वेदोत्पत्ति संवत् 1,96,08,53,122 वां वर्ष चल रहा है। इतने वर्ष पूर्व ही हमारी यह सृष्टि वा समस्त ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आये हैं। 4.32–1.96–0.26=2.10 अरब वर्षों बाद इस सृष्टि की प्रलय होनी है। प्रलय तक इस सृष्टि में मनुष्य एवं अन्य प्राणियों के उनके पूर्वजन्मों के शुभाशुभ कर्मों के अनुसार जन्म व मरण होते रहेंगे। इस प्रकार हमें सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता वा निमित्त कारण ईश्वर, सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति तथा जिसके लिये सृष्टि बनाई गई उन जीवों का सत्य व यथार्थ उत्तर मिल जाता है।

लेख का जो विषय है, उसमें सम्मिलित सभी शंकाओं का समाधान हो गया है। सृष्टि विषयक इन प्रश्नों का समाधान केवल वैदिक धर्म में ही उपलब्ध होता है। वैज्ञानिक भी अभी इस जानकारी को प्राप्त कर इसकी पुष्टि व खण्डन नहीं कर सके हैं। हम ईश्वर, वेद, सभी वेदर्षियों सहित ऋषि दयानन्द के भी आभारी हैं जिन्होंने हमें विलुप्त व विस्मृत इन सभी प्रश्नों व शंकाओं का युक्ति संगत समाधान प्रदान किया है। हम उन्हें सादर नमन करते हैं।

-वैदिक साधन आश्रम तपोवन का शरदुत्सव सोल्लास सम्पन्न-

'आर्यसमाज अविद्या, अन्याय तथा अभाव को स्वीकार नहीं करता: आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का पांच दिवसीय शरदुत्सव कोरोना महामारी के शिथिल होने पर दिनांक 20 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2021 तक सोल्लास आयोजित किया गया। कोरोना रोग के सभी नियमों का पालन करते हुए आश्रम के अधिकारियों द्वारा पूरी सावधानी सहित उत्सव को सम्पन्न किया गया। लोगों के उत्साह ने आश्रम के अधिकारियों में उत्साह का संचार किया। देश के दूरस्थ भागों असम व महाराष्ट्र सहित दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश आदि से इस उत्सव में श्रद्धालु सम्मिलित हुए। श्रद्धालुओं के इस प्रेम व सहयोग ने आश्रम के कार्यक्रमों व गतिविधियों के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित की है जिससे भविष्य में वैदिक धर्म एवं संस्कृति के उज्जवल रूप से जुड़े यज्ञ, योग, ध्यान, उपासना एवं सत्संग आदि आयोजनों की प्रेरणा प्राप्त हुई है। आगामी ग्रीष्मोत्सव भी मई 2022 में इसी प्रकार उत्साह एवं उमंग से सम्पन्न होने का अनुमान है। आशा है कि आश्रम का आगामी उत्सव भी वर्तमान उत्सव से कुछ अधिक भव्यता एवं प्रभाव से युक्त होगा।

वर्तमान सम्पन्न हुए शरदुत्सव में पांच दिन प्रातः 5.00 बजे से 6.00 बजे तक की जाने वाली योग साधना के निर्देशक ऋषिभक्त संन्यासी स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी थे। आश्रम में आयोजित उत्सव में प्रातः व अपरान्ह अथर्ववेद के मन्त्रों से यज्ञ किया गया। रविवार 24 अक्टूबर, 2021 को यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। इस अथर्ववेद आंशिक पारायण यज्ञ के ब्रह्मा रोजड़ से पधारे वेदनिष्ठ स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती जी थे। यज्ञ में मंत्रोच्चार गुरुकुल के दो ब्रह्मचारियों ने किया। यज्ञ का संचालन पं. सूरतराम शर्मा जी तथा हरिद्वार से पधारे आर्य विद्वान पं. शैलेशमुनि सत्यार्थी जी ने किया। शरदोत्सव में श्रोताओं को अनेक विद्वानों के सदुपदेश सुनने का अवसर मिला। इन विद्वानों के नामों का उल्लेख आगे कार्यक्रमों का विवरण देते हुए किया गया है। पांच दिनों आश्रम परिसर में वैदिक धर्म चर्चा एवं प्रचार का मेला लगा रहा। लोग उत्साह के साथ आपस में एक दूसरे से मिले। सबने परस्पर एक दूसरे के क्षेत्र में वैदिकधर्म प्रचार की स्थिति व चुनौतियों को जाना और विचारों का आदान—प्रदान किया।

उत्सव के पांचों दिन प्रातः 5.00 बजे से 6.00

बजे तक स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के निर्देशन में योग साधन का प्रशिक्षण एवं अभ्यास किया गया। प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक 2 घंटे अथर्ववेद यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती, रोजड़ थे। स्वामी जी ने यज्ञ के मध्य व यज्ञ के पश्चात भी अथर्ववेद के पाठ किये जा रहे मन्त्रों पर आधारित यज्ञोपदेश दिया। यज्ञ की समाप्ति के बाद आश्रम के प्रागंण में ध्वजारोहण हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण कर उत्सव का उद्घाटन किया और अपने उदबोधन में सभी आर्यों को सम्बाधित करते हुए ईश्वर के निज नाम ओ3म् को दर्शाने वाले ध्वज को अपने आवासों पर सबसे ऊंचे स्थान पर लगायें तथा ओ3म् ध्वज को पूर्ण सम्मान देने का संकल्प कराया। उनके अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी धर्मप्रेमी जिज्ञासुओं को अपने संक्षिप्त अमृत वचनों से सम्बोधित किया। ध्वजारोहण के बाद आश्रम के सभागार में 'सामाजिक उन्नति में आर्यसमाज की भूमिका' विषय पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती, स्वामी आदित्यवेश तथा श्री शैलेशमुनि सत्यार्थी जी के व्याख्यान हुए। सत्संग में प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक, पं. आर्यमुनि वानप्रस्थ पूर्व नाम श्री रूवेल सिंह तथा श्री रमेशचन्द्र स्नेही के भजन हुए। कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अपरान्ह 3.30 बजे से भी अथर्ववेद यज्ञ हुआ जिसमें स्वामी मुक्तानन्द जी सहित अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा पं. दिनेश पथिक जी के भजन हुए। रात्रि 8.00 बजे भी भजन व प्रवचन का आयोजन आश्रम के सभागार में किया गया जिसमें आश्रम में पधारे ऋषिभक्तों ने भाग लिया तथा भक्ति संगीत तथा वैदिक विचारों से लाभान्वित हुए।

उत्सव के दूसरे दिन 21 अक्टूबर, 2021 को प्रातः 5.00 बजे से योग साधना आरम्भ कर इसके बाद प्रातः 6.30 बजे से अथर्ववेद यज्ञ आरम्भ कर इसे सम्पन्न किया। स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती जी ने वेद प्रवचन किया तथा यजमानों व यज्ञ में उपस्थित सभी ऋषिभक्तों को आशीर्वाद दिया। यज्ञ में स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी की उपस्थिति भी सभी यजमानों व उपस्थित ऋषिभक्तों को वेद पथ पर चलने की प्रेरणा देती रही। इसके बाद आश्रम के सभागार में 'शारीरिक उन्नति के वैदिक उपाय' विषय पर विद्वत गोष्ठी वा सम्मेलन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय, देहरादून के उपकुलपति एवं प्रसिद्ध मर्म चिकित्सक आयुर्वेदाचार्य प्रो. डा. सुनील कुमार जोशी जी थे। कार्यक्रम में स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती पूर्व नाम डा. विनोद कुमार शर्मा (प्राकृतिक चिकित्सक), आचार्य आशीष दर्शनाचार्य एवं पं. विष्णुमित्र वेदार्थी जी मुख्य वक्ता थे। इस कार्यक्रम में विद्वान वक्ताओं ने विषय से सम्बन्धित महत्वपूर्ण विचारों को प्रस्तुत किया। अपरान्ह 3.30 बजे से भी अथर्ववेद यज्ञ हुआ जिसमें स्वामी मुक्तानन्द जी सहित अन्य विद्वानों के प्रवचन तथा पं. दिनेश पथिक जी के भजन हुए। रात्रि 8.00 बजे से भजन व प्रवचन का आयोजन आश्रम के सभागार में हुआ जिसमें आश्रम में पधारे ऋषिभक्तों ने भाग लिया।

उत्सव के तीसरे दिन पूर्व दिनों के अनुरूप प्रातः योग साधना तथा अथर्ववेद यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। यज्ञ में स्वामी मुक्तानन्द जी का उपदेश तथा पं. दिनेश पथिक जी के भजन हुए। हम भी इस आयोजन में सम्मिलित हुए। पूर्वान्ह 10.00 बजे से आश्रम के सभागार में 'युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति, दुष्परिणाम एवं समाधान' विषय पर महिला सम्मेलन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा जी ने की। इस सम्मेलन में द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की विदुषी आचार्या डा. अन्नपूर्णा एवं माता सुरेन्द्र अरोड़ा जी सहित पं. विष्णुमित्र वेदार्थी, आचार्य आशीष दर्शनाचार्य, श्रीमती पुष्पा गोसाईं ने सम्मेलन के विषय पर अपने प्रेरक एवं सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए जिसे सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं ने सराहा। इस कार्यक्रम

में मातृशक्ति के महत्व पर पं. दिनेश पथिक, श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं महात्मा आर्य मुनि वानप्रस्थ जी के प्रेरक एवं प्रभावशाली भजन व गीत भी हुए। सायंकालीन सत्र में 'राष्ट्र निर्माण में नारी शक्ति की भूमिका' विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पं. विष्णुमित्र वेदार्थी जी तथा आचार्या दीप्ति जी थी। पं. विष्णुमित्र वेदार्थी जी आर्यसमाज के अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता एवं विद्वान है। सभी श्रोता उनके विचारों से प्रभावित होते हैं। उनका प्रेरक उद्‌बोधन सभी ने पसन्द किया।

उत्सव के चौथे दिन का यज्ञ आदि का कार्यक्रम आश्रम की पर्वतीय इकाई तपोभूमि में किया जो आश्रम से तीन किमी. दूरी पर पर्वत शिखर पर वनो से आच्छादित सुरम्य, मनोहर एवं शान्त स्थान पर स्थित है। प्रथम यहां पर अथर्ववेद यज्ञ स्वामी मुक्तानन्द जी के ब्रह्मत्व में हुआ। यज्ञ में मन्त्रोच्चार गुरुकुल पौंधा के दो ब्रह्मचारियों ने किया। यहां आयोजित सत्संग में वक्ताओं ने अपने विचारों को 'मानव जीवन में अध्यात्म का महत्व' विषय पर केन्द्रित कर प्रस्तुत किया। यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद प्रातराश लिया गया। इसके बाद स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य आशीष दर्शनाचार्य तथा पं. विष्णुमित्र वेदार्थी आदि विद्वानों के प्रवचन हुए। इस कार्यक्रम में अनेक श्रद्धालु श्रोताओं ने भजन सुनाये। प्रमुख भजनोपदेशक पं. दिनेश पथिक, श्री रूवेल सिंह तथा पं. रमेशचन्द्र स्नेही जी के हुए। इस कार्यक्रम के बाद सायंकाल का कार्यक्रम आश्रम की मुख्य इकाई में अपरान्ह 3.30 बजे से अथर्ववेद यज्ञ से हुआ। यज्ञ के अनन्तर भजन, उपदेश हुए। सायंकालीन सन्ध्या की गई जिसके बाद कार्यक्रम को विराम दिया गया। रात्रि 8.00 बजे से भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया। इस भजन सन्ध्या में गीतों एवं भजनों की मुख्य प्रस्तुतियां पं. दिनेश पथिक जी, श्रीमती मीनाक्षी पंवार तथा कु. निकिता आर्या जी हरिद्वार ने दी। लोगों ने भजनों का आनन्द लिया। सभी श्रोताओं ने इस भजन सन्ध्या आयोजन की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। देर रात्रि 10.30 बजे तक कार्यक्रम चलता रहा।

रविवार दिनांक 24 अक्टूबर, 2021 को पांच दिनों से प्रातः व सायं चल रहे अथर्ववेद यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। स्वामी मुक्तानन्द जी ने सभी यजमानों तथा यज्ञ में उपस्थित लोगों को आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर अपने व्याख्यान में स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती, रोजड़ ने कहा कि हम जो यज्ञ करते हैं वह एक उपलक्षण है। इस यज्ञ के द्वारा हमें किसी दूसरे यज्ञ तक पहुंचना है। स्वामी जी ने देवयाजी व आत्मयाजी यज्ञों की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि हर मुनष्य चाहता है कि उसे सुख प्राप्त हों और उसके सभी दुःख दूर हों जायें। स्वामी जी ने कहा कि हम कोई भी कार्य करते हैं तो उसके लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। गलत कामों का कारण व्यक्ति का अज्ञान होता है। जैसा ज्ञान होता है वैसे ही मनुष्य के कर्म, उसकी भक्ति व प्रार्थना होती है। स्वामी जी ने कहा कि बाह्य यज्ञ की भांति हमारे भीतर भी एक आध्यात्मिक यज्ञ चलना चाहिये। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में संन्यासी को यज्ञ करने की इसलिए छूट है क्योंकि उसका जीवन ही यज्ञमय होता है। स्वामी मुक्तानन्द जी ने कहा कि हमें जीवन को यज्ञ व परोपकारमय बनाने के लिए शास्त्रों की आज्ञानुसार दैनिक यज्ञ करना चाहिये। स्वामी जी ने मनुष्यों द्वारा किए जाने वाले पाप व पुण्य कर्मों की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि पापकर्म सदैव व सर्वथा बुरे होते हैं। पुण्य कर्म सकाम तथा निष्काम दोनों श्रेणी के होते हैं। स्वामी जी ने सकाम तथा निष्काम कर्मों के अनेक उदाहरण भी दिए। स्वामी जी ने कहा कि जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा का पालन करने सहित यज्ञ कर्म को भी करता है, उसके जीवन में किसी वस्तु वा पदार्थ का अभाव नहीं होता। आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी मुक्तानन्द जी ने आगे कहा कि

जो काम हम अपने हित के लिए करते हैं वह सब सकाम कर्म होते हैं। हमारे जिन कर्मों से दूसरों का हित होता है वह निष्काम कर्म होते है। जो मनुष्य सत्य बोलता है उसका सर्वत्र यश फैलता है। सत्य व यश से युक्त जीवन वाले व्यक्ति को सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। स्वामी जी ने यजमानों को बोले जाने वाले आशीवर्चनों को बोलकर उनकी हिन्दी में व्याख्या करके अपने कथन की पुष्टि की। कार्यक्रम का संचालन कर रहे विद्वान श्री शैलेश मुनि सत्यार्थ जी ने श्रोताओं को स्वामी मुक्तानन्द जी के अन्तरंग जीवन की चर्चा करते हुए बताया कि स्वामी मुक्तानन्द जी अधिकांशतः साधना में लीन रहते हैं और जीवन में सभी वैदिक नियमों का पालन करते हैं।

आश्रम के यशस्वी प्रधान श्री विजय कुमार आर्य जी, कीरतपुर–बिजनौर ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि उत्सव का कार्य बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहा है। उन्होंने उत्सव की सफलता के लिए स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी, स्वामी मुक्तानन्द जी, साध्वी प्रज्ञा जी सहित सभी विद्वानों का धन्यवाद किया। प्रधान जी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हमारा आर्यसमाज सभी क्षेत्रों में आगे बढ़े। देश देशान्तर में वेदों तथा वैदिक शिक्षाओं का प्रचार हो। श्री विजय कुमार आर्य जी ने उत्सव में दूर दूर से पधारे सभी आर्यजनों व ऋषिभक्तों का हृदय से आभार व्यक्त करने के साथ उनका धन्यवाद किया।

यज्ञ समाप्ति के बाद भजन एवं प्रवचन तथा विद्वत सम्मान का कार्यक्रम आश्रम के सभागार में प्रातः 10 बजे आरम्भ हुआ। कार्यक्रम का विषय था 'राष्ट्रोत्थान में आर्यसमाज की प्रासंगिकता एवं योगदान'। इस आयोजन में आचार्य आशीष दर्शनाचार्य, साध्वी प्रज्ञा जी, पं. विष्णुमित्र वेदार्थी, डा. नवदीप कुमार, डा. अन्नपूर्णा, डा. श्रीमती सुखदा सोलंकी, श्री तेज नारायण आर्य, असम, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी तथा सभा के अध्यक्ष श्री सुखवीर सिंह वर्मा जी सहित आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा जी के सम्बोधन हुए। हम यहां आचार्य आशीष जी तथा पं. विष्णुमित्र वेदार्थी के व्याख्यानों को प्रस्तुत कर रहे हैं। स्थानाभाव के कारण अन्य विद्वानों के व्याख्यान नहीं दे रहे हैं।

आचार्य आशीष जी ने अपने सम्बोधन के विषय 'राष्ट्रोत्थान में आर्यसमाज की प्रासंगिकता एवं योगदान' की चर्चा की। उन्होंने पूछा कि हम आर्यसमाज की ओर से राष्ट्र के उत्थान में क्या योगदान दे सकते हैं? इसका स्वयं उत्तर देते हुए आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज ने राष्ट्र की उन्नति में अनेक योगदान दिये हैं। हम सब भी योगदान दे रहे हैं। आचार्य जी ने वेदोक्त वर्ण व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था का उल्लेख किया और इस पर प्रकाश डाला। वानप्रस्थ की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस आश्रम का एक प्रमुख उद्देश्य मनुष्य द्वारा सत्कर्मों को करके अगले जन्म में पुनः मनुष्य–जीवन को प्राप्त करना तथा मुक्ति पथ पर कुछ आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न करना है। वानप्रस्थ आश्रम के मुख्य उद्देश्य को हमें समझने की आवश्यकता है। वह उद्देश्य यह है कि हमें जीवन के जिन विषयों का अनुभव है, अपने उस ज्ञान व अनुभव को हम समाज को निष्पक्ष व निस्वार्थ भाव से प्रदान करें। आचार्य जी ने कहा कि आपको ऐसा बहुत कुछ ज्ञान व अनुभव है जिससे राष्ट्र व इसकी युवा पीढ़ी को लाभ हो सकता है। अपने उस ज्ञान व अनुभवों को आप युवा पीढ़ी को प्रदान करें। आचार्य जी ने कहा कि आप घर में उस सोच के साथ रहिये कि मुझे जो आता है उसे मैं नई युवा पीढ़ी को सिखाऊंगा व बताऊंगा। आपका यह कार्य आपको समाज व इसकी युवा पीढ़ी से जोड़ेगा।

अपने सम्बोधन में आचार्य पं. विष्णुमित्र वेदार्थी जी ने कहा कि आज के उनके सम्बोधन का विषय है राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज की भूमिका। विद्वान वक्ता श्री विष्णुमित्र वेदार्थी जी

ने कहा कि जितना आपका सूर्य व उसके प्रकाश के साथ सम्बन्ध है उतना ही आपका आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध भी है। घर में खिड़की लगाने से हमें सूर्य का प्रकाश मिलता है। घर में खिड़की लगाना व उसे सूर्य का प्रकाश आने के लिये खोलना हमारा कर्तव्य व गुण है और खिड़की न लगाना हमारा दोष होता है। इसी प्रकार से जो व्यक्ति आर्यसमाज से नहीं जुड़ पाया यह उसका अपना दोष है। आचार्य विष्णुमित्र जी ने कहा कि आर्यसमाज कभी सत्य का खण्डन और असत्य का मण्डन नहीं करता। उन्होंने कहा कि मैं एक दृण सनातनी हूं। श्रोताओं व देशवासियों को उन्होंने आह्वान किया कि तुम एक बार आर्यसमाज में आ तो जाओ फिर बताना कि क्या आर्यसमाज ने कभी किसी सत्य बात का खण्डन किया है? विद्वान वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज अविद्या, अन्याय तथा अभाव को स्वीकार नहीं करता। आर्यसमाज सत्य विद्याओं को स्वीकार करता है और उसका प्रचार करता है।

आचार्य वेदार्थी जी ने कि मैं दयानन्द जी की बात बोलता हूं, अपनी निजी बात या मान्यता नहीं बोलता। इसलिए मेरी बात का कोई व्यक्ति खण्डन नहीं कर सकता। ऋषि दयानन्द जी ने भी सभी बातें वेदानुकूल एवं वेद के ऋषियों के प्रमाणों के अनुरूप युक्ति एवं तर्क से युक्त प्रस्तुत की हैं। आर्यसमाज व वैदिकधर्म से इतर मत अनेक सत्य मान्यताओं का खण्डन और असत्य मान्यताओं का मण्डन करते हैं। आचार्य जी ने कहा कि वह, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, कहते हैं कि विश्व की उन्नति में सत्य मान्यताओं का ही योगदान है। असत्य मान्यताओं से समाज व देश की अवनति होती है। सामाजिक समरसता नष्ट होती है। आचार्य वेदार्थी जी ने कहा कि विश्व की उन्नति में किसी एक संस्था का यदि सबसे अधिक योगदान है तो वह आर्यसमाज ही है जो कभी सत्य का खण्डन नहीं करती और न ही भविष्य में कभी करेगी। आचार्य जी ने कहा कि सब पन्थों का सम्मान करने की मान्यता छोड़ों। केवल पन्थों की सत्य मान्यतायें ही स्वीकार करने योग्य होती हैं। पन्थों में बहुत सी असत्य मान्यतायें होती हैं जिनका त्याग करना अत्यावश्यक होता है। नहीं करेंगे तो मनुष्य व समाज की उन्नति नहीं हो सकती। हमें सभी पन्थों की असत्य मान्यताओं व विचारों को दूर करने के लिए उनका खण्डन द्वारा प्रयास करना चाहिये, यदि ऐसा नहीं करेंगे तो सत्य प्रतिष्ठित नहीं होगा और न ही उन्नति होगी। विद्वान वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज का कर्तव्य विद्या का विकास व प्रचार करना है। आचार्य जी ने अपने सम्बोधन में अन्य अनेक महत्वपूर्ण बातें और भी कही। आज के समापन समारोह में सभी वक्ता विद्वानों एवं भजनोपदेशकों सहित स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती जी, साध्वी प्रज्ञा जी, श्री शैलेशमुनि सत्यार्थी जी एवं आश्रम के सबसे पुराने संस्थापक–सदस्य श्री मनजीत सिंह जी का सम्मान भी किया गया। आश्रम के यशस्वी मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी के आश्रम की उन्नति के लिए किए जा रहे कार्यों की सभी विद्वानों ने सराहना की।

इसी के साथ पांच दिनों से चल रहे वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के शरदोत्सव का समापन हुआ। इसके बाद सभी आगन्तुकों ने मिलकर ऋषि लंगर प्राप्त किया। लंगर के बाद सब ऋषिभक्त अपने अपने घरों की ओर प्रस्थान कर गये। इस वर्ष के शरदोत्सव में लोगों की बड़ी संख्या में उपस्थिति से आश्रम के अधिकारी सन्तुष्ट व प्रसन्न दिखाई दिए। उत्सव की सभी व्यवस्थायें इसके अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बहुत ही उत्तम की थी जिनसे आश्रम में पधारे सभी लोग सन्तुष्ट दिखाई दिए।

स्मृति नाश और उसका आयुर्वेदिक इलाज

—वैद्य भगवान दास

स्मृति अथवा स्मरणशाक्ति पहले समय (भूतकाल) में सीखी गई या जानी गई बातों को याद करना है। अर्थात् पहले समय में व्यक्ति ने जो भी जानकारी हासिल की है, उसे याद करना ही स्मृति कहलाती है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के नाम को याद करता है, तो इससे दो बातें सिद्ध होती हैं—(1) उसने कभी किसी समय उस नाम की जानकारी प्राप्त की थी, और (2) बीच के समय इस व्यक्ति ने उस जानकारी को धारण करके रखा, चाहे इस दौरान उसने एक बार भी उसके बारे में सोचा न हो। इससे यह स्पष्ट है कि धारण करने की क्रिया निष्क्रिय है, जबकि याद करने की सक्रिय। और ये दानों ही स्मरणशक्ति के अंतर्गत शामिल है।

आयुर्वेद का मानना है कि शरीर और मन, दोनों के बीच गहरा संबंध है। इसके मतानुसार, कोई भी घटना अथवा कार्य केवल शरीर या केवल मन से संबंधित नहीं हो सकता। हां, यह तो हो सकता है कि किसी एक कार्य में मन प्रधान हो और शरीर गौण तथा दूसरे कार्य में शरीर प्रधान हो और मन गौण। इस प्रकार, अच्छी याददाश्त के लिए तथा याददाश्त की कमी (स्मृतिनाश) को सुधारने के लिए मानसिक और शारीरिक, दोनों ही तत्व प्रभावशाली हैं।

उपचार

जब व्यक्ति के सीखने(ज्ञान प्राप्त करने) और याद करने की क्रियाओं में विकार आ जाता है, तो इसे ठीक करने के लिए अधिकतर ब्राह्मी नामक औषधि—द्रव्य का प्रयोग किया जाता है। ब्रह्मी दो प्रकार की होती है—एक प्रकार की ब्राह्मी मत्स्याक्षी कहलाती है, तो दूसरे प्रकार की मंडूकपर्णी। ये दोनों प्रकार की जड़ी—बूटियां समान रूप ही स्मरणशक्ति बढ़ाने में सहायक हैं। ये वर्षभर बहनेवाले स्रोतों के समीप नमी वाले इलाकों में पाई जाती हैं। इन दोनों के पौधों का रस निकालकर औषधि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। दोनों ही कड़वे और कसैले स्वादवाले द्रव्य हैं, अतः इनमें थोड़ा शहद मिलाकर रुचिपूर्वक प्रयोग में लाया जाता है। इससे इनका स्वाद कुछ अच्छा हो जाता है। इस रस का सेवन छः छोटे चम्मच (30 मि.ली.—एक औंस) की मात्रा में, दिन में दो

बार, खाली पेट में ही कराना चाहिए। इस औषधि–द्रव्य का जो अंश घी, आदि वसा पदार्थों में मिल जाता है, वह स्मरणशक्ति को बढ़ाने में बहुत उपयोगी है। गाय का घी हृदय और मस्तिष्क दोनों को बल प्रदान करने के लिए बहुत सहायक माना गया है। यही कारण है कि ब्राह्मी और कुछ अन्य औषधीय द्रव्यों को गाय के शुद्ध घी के साथ पकाकर तैयार किया गया ब्राह्मी घृत इस दृष्टि से बहुत लाभप्रद माना गया है। इस घी को एक चम्मच (5 मि.ली.) की मात्रा में, दिन में दो बार खाली पेट में रोगी को दिया जाता है। इसके सेवन के लिए इस घी को चीनी मिले हुए एक प्याला गर्म दूध में डालना चाहिए। इसे चम्मच से अच्छी तरह मिलाएं। जिससे यह घी पिघलकर दूध के साथ मिल जाए। जब स्मृतिनाश के साथ–साथ रोगी बहुत दुबला भी हो, तो यह औषधीय घृत विशेष रूप से लाभकारी सिद्ध होता है।

ब्रह्मी के अतिरिक्त आयुर्वेदिक चिकित्सक वचा नामक औषधि द्रव्य का प्रयोग स्मरणशक्ति की वृद्धि के लिए करते हैं। यह वनस्पति भी नमी वाले स्थानों में पाई जाती है। इस पौधे के कंद या जड़ का प्रयोग औषधि के लिए किया जाता है। सबसे पहले इसे अच्छी तरह साफ करके छाया में सुखाया जाता है। तब पीसकर बारीक चूर्ण बनाया जाता है। इस चूर्ण को एक छोटे चम्मच (5 ग्राम) की मात्रा में दिन में दो बार शहद अथवा गाय के घी में मिलाकर रोगी को देना चाहिए। स्मरणशक्ति बढ़ानेवाली अनेक आयुर्वेदिक औषधियों में ब्राह्मी और वचा द्रव्य पाए जाते हैं, जैसे–सारस्वत चूर्ण।

आहार

मीठे और स्निग्ध(चिकने) खाद्य–पदार्थ इस रोग के लिए बहुत लाभकारी माने गए हैं। रोगी को गाय के दूध, घी तथा गाय के दूध से तैयार दूसरे पदार्थों का सेवन करना चाहिए। तीखे और मसालेदार भोजन तथा कड़वे और कसैले पदार्थों का सेवन रोगी को नहीं करना चाहिए। बादाम और बादाम–रोगन का सेवन लाभप्रद है, क्योंकि ये स्मरण–शक्ति बढ़ाने के लिए बहुत उपयोगी हैं। रोगी को आंवले का प्रयोग मुरब्बा, आचार, चटनी अथवा सब्जी, किसी भी रूप में अवश्य करना चाहिए।

अन्य आचार–विचार

उपरोक्त सभी औषधियां तभी प्रभावकारी सिद्ध होती हैं, जब रोगी मानसिक रूप से पूरी तरह शांत हो। इसलिए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि रोगी चिंता, व्याकुलता, भावनात्मक दबाव और तनावों से दूर रहें। रोगी को सलाह देनी चाहिए कि वह धार्मिक कार्यों का आचरण अधिक से अधिक करे तथा आध्यात्मिक व धार्मिक रूप से प्रार्थना आदि भी करें। स्मरण–शक्ति को बढ़ाने और स्मृतिनाश को दूर करने के लिए योगशास्त्र में बताए गये तरीके के अनुसार कुछ समय तक ध्यान करना बहुत लाभकारी सिद्ध होगा।

सम्मानीय बन्धुओं,

20 अक्टूबर, 2021 से 24 अक्टूबर, 2021 तक सम्पन्न शरदुत्सव में आपके उत्साह एवं सहभागिता तथा दान के कारण यह आयोजन अत्यधिक सफल रहा। हमें एक ओर जहां वैदिक विद्वानों के अमृत वचन श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वहीं श्री दिनेश पथिक, प्रसिद्ध भजनोपदेशक, मधुर संगीत में प्रवीण श्रीमती मीनाक्षी पंवार एवं श्रीमती प्रवीण आर्य के भजनों ने उत्सव में चार चांद लगा दिये। आशा है मई 2022 में प्रस्तावित ग्रीष्मोत्सव में आप सभी और अधिक उत्साह एवं भारी संख्या में पधारकर आश्रम के आयोजकों का उत्साहवर्धन करेंगे। इस समस्त आयोजन में हमारे नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री विजय कुमार आर्य जी का आशीर्वाद हमें निरंतर प्रेरणा देता रहा जिसके लिए हम सोसायटी के समस्त सदस्य उनका आभार व्यक्त करते हैं।

-प्रेम प्रकाश शर्मा, सचिव

भूकंप–जागरूकता एवं जानकारी ही बचाव का एकमात्र उपाय है

–डा0 अजेय पॉल, देहरादून

लगभग 55 करोड़ वर्ष पहले हिमालय पर्वत की उत्पत्ति महाद्वीप–महाद्वीप भूभाग की टक्कर के कारण हुई है। हिमालय पर्वत श्रृंखला में उच्च भूकंपीय और विवर्तनिक गतिविधियाँ होती है। हिमालयी क्षेत्र के अधिकतम क्षेत्रों को भारतीय ब्यूरो द्वारा प्रकाशित भूकंपीय क्षेत्रीकरण मानचित्र के उच्चतम जोन 5 और 4 में रखा गया है। हिमालयी क्षेत्रों में कई थ्रस्ट फॉल्ट हैं जो 8.0 या उससे अधिक की तीव्रता के भूकंप उत्पन्न करने में सक्षम हैं। भूतकाल में, हिमालय क्षेत्र में ≥ 7.0 तीव्रता के 15 बड़े भूकंप आए हैं, इनमें पांच ≥ 8.0 तीव्रता के भूकंप भी शामिल हैं। सम्पूर्ण हिमालय श्रृंखला को कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक 15 खंड़ों में विभाजित किया गया है, जहां 7.7 या उससे अधिक की तीव्रता का भूकंप आ सकता है। इसलिए यह सम्पूर्ण क्षेत्र भूकंपीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हिमालय क्षेत्र बड़ी आबादी के साथ–साथ कई बड़े पनबिजली संयंत्रों का स्थान भी है और इसलिए यह क्षेत्र भूकंप की दृष्टि से और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। आज तक पूरे विश्व में बहुत से भूकंपीय अध्ययन किए गए हैं, तथापि आज तक भूकंप की भविष्यवाणी करना संभव नहीं हो सका है।

वर्तमान में वैज्ञानिक भूकंप की भविष्यवाणी नहीं कर सकते, इसलिये भूकंप से बचने का एकमात्र तरीका भूंकप से बचाव की तैयारी कर ही भूकंप से बचा जा सकता है। इसलिए भूकंप संभावित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को पता होना चाहिए कि वे भूकंप के दौरान खुद को कैसे सुरक्षित कर सकते हैं। भारत में कई संस्थाए हैं जो भूकंप से बचाव की तैयारियों के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाती हैं। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान, भारत के विभिन्न राज्यों में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण और विभिन्न सरकारी विभाग और स्वयत्त संस्थान भी इस तरह के कार्यक्रम चलाते है। भूकंप से बचाव की तैयारी के लिये हमें पता होना चाहिए कि हमें 1–भूकंप से पहले, 2–भूकंप के दौरान, 3–भूकंप के बाद क्या कदम उठानें है। भूकंप आने से पहले हमें मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए, जैसे अपने भवन को भूकम्प प्रतिरोधक बनाया जाना सुनिश्चित करें, यह एक आम समझ है कि भूकंप प्रतिरोधक भवन बनाने के लिए बहुत धन की आवश्यकता होती है लेकिन अगर हम भूकंप प्रतिरोधक कोड़ का पालन करते हैं तो यह सामान्य से लगभग 15 प्रतिशत अधिक लागत लेगा। इसके साथ–साथ परिवार के लिये आपातकालीन योजना तैयार करें और नियमित रूप से उसका अभ्यास करें। अपने क्षेत्र से बाहर के व्यक्तियों को चिन्हित करें तथा उनके दूरभाष नम्बर सुरक्षित रखें ताकि आपातकाल में उनसे संपर्क कर सकें। आसानी से पहुँच सकने वाले और खुले में स्थित ऐसे कुछ स्थानों का चयन करें जहाँ पर आपातकालीन स्थिति में परिवार के सदस्य मिल सकें। आपात आपूर्ति किट तैयार करें जिसमें खाद्य पदार्थ, दवाईयाँ, फ्लैसलाईट, कपड़े, जूते व निजी प्रसाधन हों। इसमें से खाद्य पदार्थों को कुछ समय के बाद बदल दें। ताकि खराब न हो। भूकंप आने के दौरान शांत रहें और घबरायें नहीं चुंकि भूकंपीय झटके साधारणतः एक मिनट से कम अवधि के होते हैं। भूकंप आने के दौरान यदि आप भवन के अंदर हैं तो अन्दर ही रहें। किसी मजबूत फर्नीचर के नीचे छुपें और सिर व

ऊपरी शरीर को फर्नीचर की सुरक्षा में रखें मजबूत फर्नीचर न होने पर घर की अन्दरूनी दीवार या तोरण के सहारे पीठ लगा कर नीचे बैठें और सिर हाथों की सुरक्षा में रखें चित्र संख्या–1। दर्पणों एवं खिड़कियों से दूर रहें।

चित्र–1, फर्नीचर के नीचे तथा अन्दरूनी दीवार के तोरण के सहारे बचाव करते हुए

भूकंप आने के दौरान घर से बाहर होने की स्थिति में भवनों, पुलों व विद्युत तारों से दूर खुले स्थानों में चलें जाए। वाहन में होने की स्थिति में पुलों, फ्लाई ओवरों, सुरंगो व विद्युत तारों से दूर खुले स्थान में वाहन रोकें और वाहन के अन्दर फर्स के समीप रहें। मलबे में फँसे होने की स्थिति में अनावश्यक न चिल्लायें इससे आप जल्दी थक जायेंगे और साथ ही इससे साँस के साथ धूल व जहरीली गैस शरीर में जा सकती है। यदि सम्भव हो सके तो अपने मुँह को रूमाल या कपड़े से ढकें। किसी वस्तु को पाईप, दीवार अथवा अन्य चीजें पर बजायें ताकि बचाव दल आपको ढूंढ सके। माचिस/लाईटर न जलायें क्योंकि अगर ज्वलनशील गैस का रिसाव है तो आग लग सकती है। शरीर को ज्यादा न हिलायें और न ही अनावश्यक चिल्लायें। अपनी ऊर्जा बचाने की कोशिश करें चूंकि बचाव दल को आपको खोजने में कुछ दिन लग सकते हैं।

भूंकप के समाप्त होने के बाद शान्त बने रहें और भगदड़ न मचायें। अस्थिर वस्तुओं तथा आस–पास के अन्य सम्भावित खतरों के प्रति सावधान रहें। गैस पानी व बिजली की स्थिति को जाँचे। रिसाव या खराबी की स्थिति होने पर तुरन्त मेन स्विच/मुख्य आपूर्ति को बन्द करें। गैस का रिसाव होने की स्थिति में घर को खाली करें और सम्बन्धितों को सूचित करें। उपर्युक्त बिंदुओं पर विचार करके हम भूकंप के कारण विनाश को कुछ हद तक कम कर सकते हैं। भूकंप के खतरे को कम करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक मॉक ड्रिल है। मॉक ड्रिल के नियमित अभ्यास से व्यक्ति भूकंप के खतरों को कम कर सकता है। जिन क्षेत्रों में लोगों का जमावड़ा होता है वहां मॉक ड्रिल अभ्यास महत्वपूर्ण हो जाता है जैसे कि स्कूल कॉलेज और विभिन्न कार्यालय। इन बिंदुओं का पालन करके मॉक ड्रिल अभ्यास किया जा सकता है। मॉक ड्रिल अभ्यास पांच प्रमुख बिंदुओं में विभाजित किया जा सकता है। 1–चेतावनी, 2–प्रतिक्रिया, 3–निष्क्रमण, 4–सभा और 5–उपस्थिति। मॉक ड्रिल अभ्यास के लिए निम्नलिखित निर्देश का पालन करें। शुरुआत में अचानक सायरन बजाऐं जो भूकंप की घटना को दर्शाता है। इसके बाद स्वयं को मेज के नीचे अथवा किसी मजबूत फर्नीचर के नीचे बचाएं और सायरन के बजने तक अपने आप को इसी तरह से सुरक्षित रखें। सायरन बंद होने के बाद अथवा भूकंप समाप्त होने के बाद कमरे से बाहर आते हुए सिर की रक्षा करते हुए खुले स्थान की ओर बढें। अगर निष्क्रमण के दौरान कोई घायल दिखे और यदि संभव हो तो निकासी के लिए उनकी मदद करें और खुले मैदान में इकट्ठा हो।

लापता को सुनिश्चित करने के लिए उपस्थिति लें और लापता व्यक्ति की खोज के लिए एक बचाव अभियान करें। मॉक ड्रिल का नियमित अभ्यास भूकंप के दौरान हमारे दिमाग को अधिक स्थिर बना सकता है और इससे भूकंप के कारण होने वाला नुकसान कम हो सकता है।

चित्र–2 में भूकंप जागरूकता तथा शिक्षा पर व्याख्यान और भूकंप यंत्र का प्रदर्शन करते हुए

वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान देहरादून द्वारा भी भूकंप के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाता है। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के विभिन्न स्कूलों/कॉलेजों और गांवो में भूकंप जागरूकता शिविर का आयोजन किया जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से उत्तराखण्ड़ राज्य के 25 विभिन्न स्कूलों व कॉलेजों और गांवो में लगभग 8600 छात्रों/ ग्रामीणें को जागरूक किया गया है। इस कार्यक्रम में भूकंप से संबंधित सुरक्षा के उपायों के बारे में जागरूक करने के लिए संबंधित व्याख्यान दिये जाते हैं। भूकंप रिकार्डिंग प्रणाली को आम लोगों के लिए प्रदर्शित किया जाता है।

भूंकपीय रिकार्डिंग आम लोगों को दिखाने और उन्हें इसके उपयोग के बारे में शिक्षित करने के लिए वास्तविक समय की रिकार्डिंग प्रदर्शित की जाती है। मॉक ड्रिल अभ्यास को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन और वीडियो के माध्यम से दिखाया जाता है। छात्रों और आम लोगों द्वारा वास्तविक मॉक ड्रिल अभ्यास किया जाता है। इस जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से भूकंप की जानकारी वाली पुस्तिका का वितरण और स्पष्टीकरण किया जाता है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में भी जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्राथमिक चिकित्सालय अर्थात् रसोईघर

—आचार्य बालकृष्ण

अजवायन

1 जो ज्यादा अल्कोहॉल पीते हों तथा अल्कोहॉल वाला पेय(शराब) छोड़ना चाहते हों, वे 1/2 किग्रा अजवायन को 4 लीटर

पानी में पकाकर तथा लगभग 2 लीटर बचने पर छानकर रखें, इसे प्रतिदिन भोजन के पहली 1–1 कप पीयें। इससे लीवर भी ठीक रहेगा। शराब पीने की इच्छा भी कम होगी।

2 अजवायन को हल्का भूनकर 2–3 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम गर्म पानी या दूध के साथ लेने से सर्दी, जुकाम या पेट के रोगों में लाभ होगा।

3 दो से तीन ग्राम अजवायन को पाउडर करके छांछ के साथ लेने से पेट के कीड़े समाप्त होते हैं।

4 दस ग्राम अजवायन को 1 लीटर पानी में पकाकर 1/4 शेष रहने पर छानकर सुबह–शाम प्रसूता स्त्री को पिलाने से प्रसूतिजन्य विकार नहीं होते। इससे बढ़ा हुआ शरीर भी अपनी स्थिति में आता है।

5 दस ग्राम अजवायन को बारीक पीसकर उसमें 1/2 नींबू का रस निचोड़ कर डालें, 5 ग्राम फिटकरी पाउडर व छांछ मिलाकर बालों में मलने से बालों की रूसी ठीक होती है, साथ ही लीखें तथा जूएँ भी मर जाते हैं।

इलायची

1 मुंह में छाले हों तो इलायची को पीसकर शहद मिलाकर लगाने से छाले ठीक होते हैं।

2 दो–तीन ग्राम इलायची को पीसकर मिश्री मिलाकर लेने से मूत्र की जलन व कम पेशाब आने की समस्या में तुरन्त लाभ होता है।

3 हिचकी नहीं रूक रही हो तो 2 इलायची व 3 लोंग को पानी में चाय की तरह उबालकर पिला दें, ठीक हो जायेगी। यदि ठीक न हो तो यह प्रयोग दिन में 2–4 बार तक कर सकते हैं।

काली मिर्च

1 खांसी के मारे सो नहीं पा रहे हों तो 1–2 काली मिर्च मुँह में रखकर चूसते रहें, खांसी में आराम हो जायेगा तथा नींद भी आ जायेगी।

2 थोड़ा अदरक व 3–4 काली मिर्च मिलाकर काढ़ा बनाकर पीने से खांसी में तुरन्त लाभ होता है, चाय के स्थान पर इसका प्रयोग कर सकते हैं।

3 शीतपित्त होने पर 4–5 काली मिर्च पीसकर उसमें 1 चम्मच गर्म घी और शक्कर मिलाकर पिलाने पर लाभ मिलेगा।

4 खांसी व उसके साथ कमजोरी भी हो तो 20

ग्राम काली मिर्च, 100 ग्राम बादाम, 150 ग्राम खांड या मिश्री मिलाकर, कूटकर पाउडर कर शीशी में भरकर रखें, 1 ग्राम सुबह–शाम गर्म दूध या गर्म पानी के साथ लेने पर पुरानी खांसी ठीक होती है। इससे कमजोरी में भी लाभ होता है।

5 हिचकी या सिर दर्द में काली मिर्च के 3–4 दानों को जलाकर उसके धुएं को सूंघने से लाभ मिलता है।

जीरा

1 जब कभी दस्त लगें, तब 4–6 ग्राम जीरे को हल्का भूनकर, पीसकर दही या दही की लस्सी के साथ लेने से तुरन्त लाभ होता है।

2 भुना हुआ जीरा व उतनी ही सौंफ को थोड़ा भूनकर, पीसकर 1–1 चम्मच पानी के साथ दिन में 3–4 बार लेने से मरोड़ के साथ होने वाले पतले दस्त में लाभ होता है।

3 पांच–सात ग्राम जीरे को 400 मिली0 पानी में पकाकर 1/4 भाग बचने पर प्रतिदिन दो बार पीने से आंतों की कृमि मर जाते हैं।

4 तीन–चार ग्राम जीरे को पानी में उबालकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से मूत्र विकार व प्रदर रोग आदि में लाभ होता है।

दालचीनी

1 दालचीनी पाचन शाक्ति को बढ़ाती है और सर्दी–जुकाम, खांसी में लाभ प्रदान करती है।

2 दालचीनी का फाण्ट बनाकर उसमें अदरख, लौंग तथा इलायची मिलाकर पीने से वातज एवं कफज विकारों का शमन होता है।

3 दालचीनी चूर्ण में शहद मिलाकर सेवन करने से श्वास–कास में लाभ होता है।

धनिया

1 सूखा धनिया पीस लें, उससे 4 गुना मिश्री मिलाकर शीशी में भरकर रखें। 1–1 चम्मच दो बार पानी के साथ लेने से अम्ल–पित्त में अत्यंत लाभ होता है। इससे पेशाब भी खुलकर होता है।

2 तीन–चार ग्राम धनिया को 400 मिली0 पानी में पकाकर जब 100 मिली0 शेष बचे, तब छानकर शीतल कर लें, उसमें थोड़ा शहद मिलाकर पीने से रक्तप्रदर या शरीर में होने वाली गर्मी में लाभ होता है।

3 गर्भावस्था में वमन होने पर या बच्चों को वमन होने पर 2–3 ग्राम धनिया को कूटकर लगभग 400 मिली0 पानी में भिगोकर उसे छान लें उसमें थोड़ा शहद मिलाकर

थोड़ी–थोड़ी देर में पिलाते रहें। उससे बैचेनी भी कम होगी व वमन शान्त हो जायेगा। इस प्रयोग से खूनी दस्त में भी लाग मिलेगा।

4 चार–पांच ग्राम धनिया व उसकी थोड़ी पत्तियों को पीसकर चेहरे पर लगाने से चेहरा सुन्दर एवं युवा तथा झांइयों से रहित हो जाता है।

5 जिन्हें काम वासना ज्यादा परेशान करती हो, वे कुछ समय तक 2–3 ग्राम धनिया का पाउडर कुद समय तक नियमित रूप से ठण्डे पानी के साथ लेते रहें। इससे काम वासना कम हो जाती है। प्रतिदिन 5–7 नीम के पत्ते चबाकर ऊपर से थोड़ा पानी पीने वाले की कामवासना शान्त हो जाती है। ऐसा करने से ग्रीव अम्लता भी तुरन्त शान्त हो जाती है।

मेथी

1 एक चम्मच मेथी को रात को 1 कप पानी में भिगो दें। प्रातः उस पानी को पीकर मेथी को भी चबाकर खायें। इससे मधुमेह में लाभ होगा व इससे होने वाली कमजोरी, वातरोगों व हृदयरोगों में भी लाभ होगा।

2 मेथी, हल्दी तथा सोंठ को बराबर मात्रा में लेकर पाउडर करके रखें। 1–1 चम्मच सुबह–शाम गर्म पानी या गर्म दूध से सेवन करें। इससे जोड़ों का दर्द व सभी तरह के वात रोग व सूजन में लाभ होता है।

3 पुराने आर्थराइटिस के रोगियों को नियमित रूप से लम्बे समय तक इसके सेवन से आशातीत लाभ होता मिलेगा।

4 मेथी को भूनकर, पीसकर कॉफी की तरह काढ़ा बनाकर थोड़ा सा अदरक मिलाकर पीने से सर्दी, कफ में लाभ होता है।

राई

1 राई को बारीक पीसकर शोथयुक्त स्थान पर लगाकर पट्टी बांधने से सूजन में लाभ होता है।

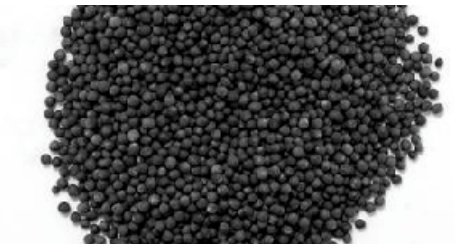

2 सिर दर्द में राई को पीसकर माथे पर लेप करने से शक्ति मिलती है।

3 राई के चूर्ण में सिरका मिलाकर पीसें, इसे त्वचा रोग (दाद, खाज, खुजली) में लगाने से लाभ मिलेगा।

लौंग

1 अचानक तेज सिर दर्द हो या आधासीसी का दर्द हो तब 4–5 ग्राम लौंग को पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर माथे(कनपटियों) पर लगाने से लाभ मिलता है।

2 लौंग को हल्का भूनकर उसको चूसते रहने से खाँसी में चमत्कारी लाभ होता है।

3 शरीर में कहीं भी नासूर या फोड़ा हो गया हो तो 5–7 लौंग व हल्दी पीसकर लगाने से लाभ होता है।

4 जाड़(दाढ़) या दांत के दर्द में लौंग को दर्द वाले स्थान में दबाने से या पाउडर करके उस स्थान पर लगाने से पीड़ी शान्त हो जाती है।

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बर्स बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर/फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है ।

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स/गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस/विन्डो बैलेन्सर्स

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

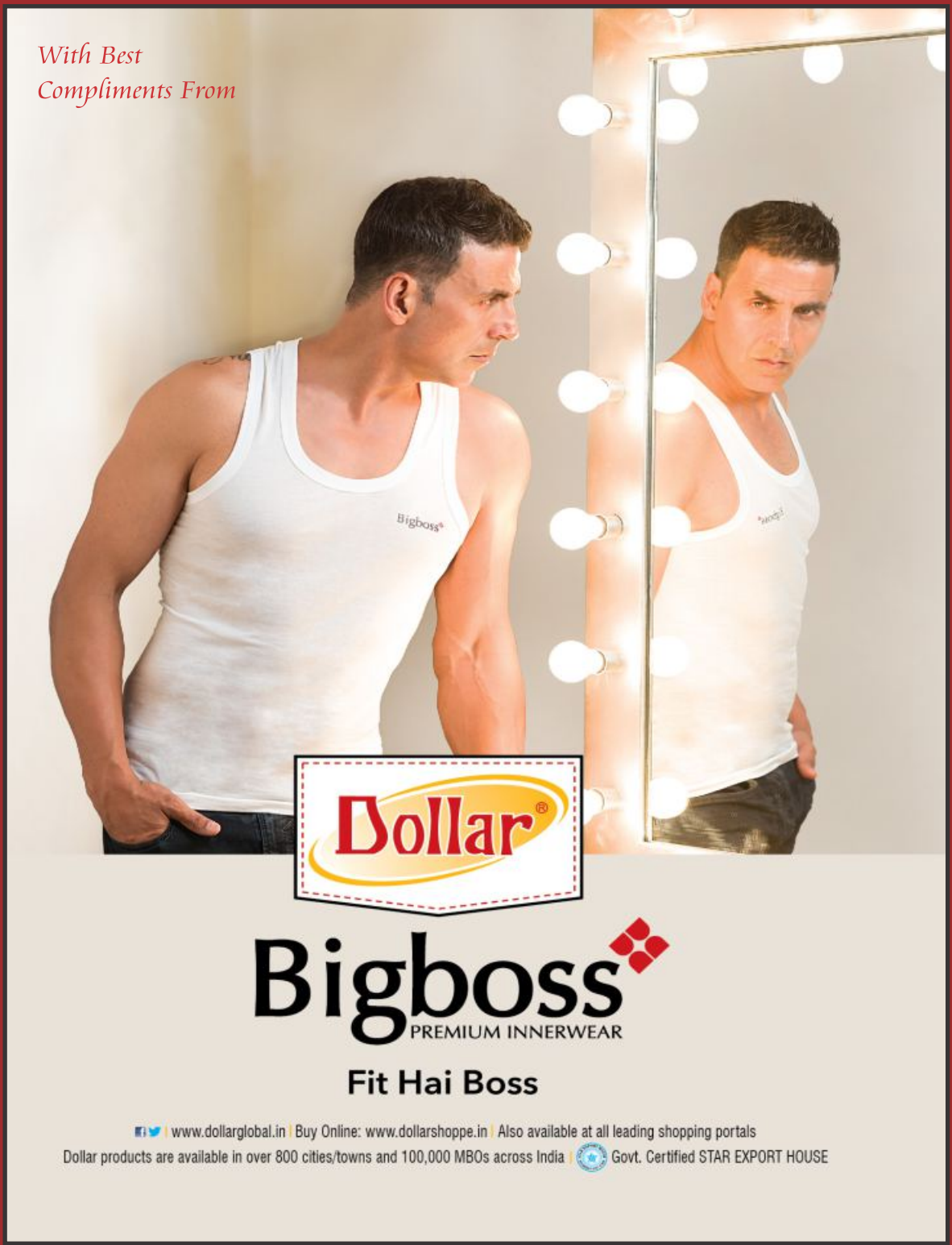

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।

संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री